संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०१५
वर्ष : २५ अंक : २
(निरंतर अंक : २७२)
पृष्ठ संख्या : ३२+४
(आवरण पृष्ठ सहित)

* गुरुपूर्णिमा पर जोधपुर में उमड़ा भक्तों का सैलाब *

झूठे, अनर्गल आरोपों पर भारी पड़ी भक्तों की श्रद्धा

गुरुदेव के पावन उपदेशों व पवित्र जीवन से प्रेरणा पाकर जिन्होंने जीवन को उन्नत करने की कला सीखी है, मानव-जीवन का वास्तविक उद्देश्य जाना है, उन्हें निंदा, कुप्रचार या दुनिया की कोई भी परिस्थिति कैसे डिगा सकती है !
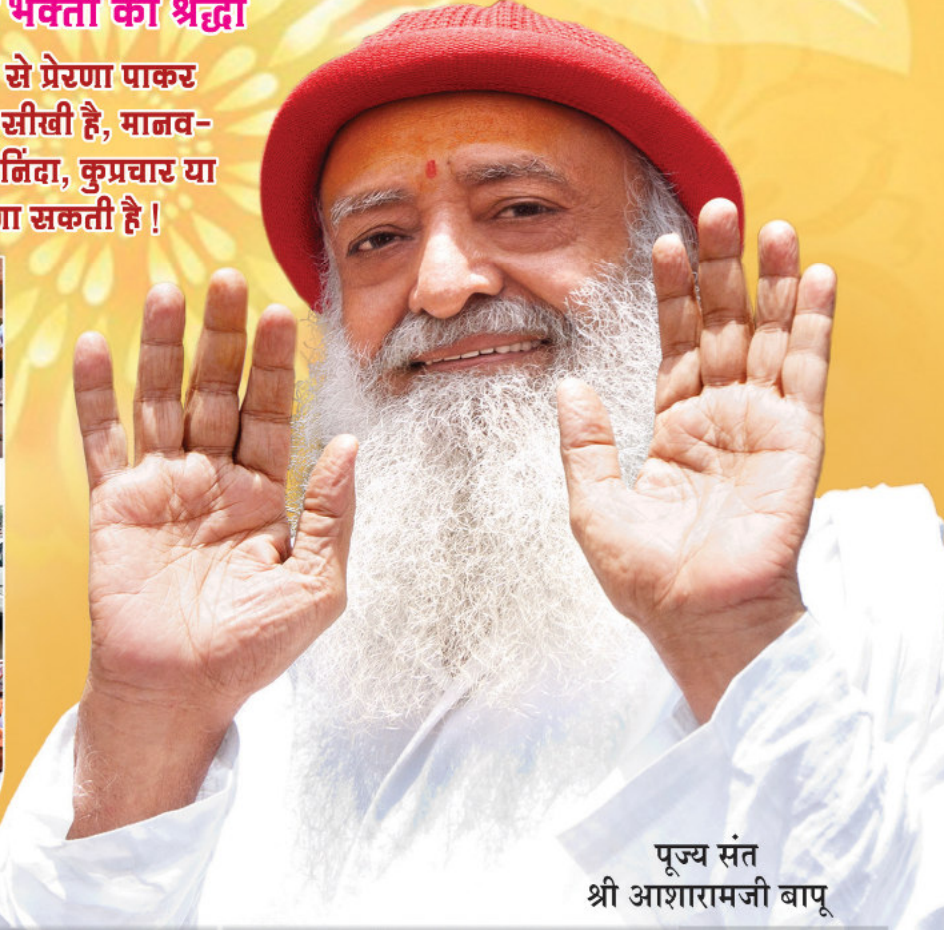
पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

''मैंने गृहमंत्री राजनाथजी से कहा कि आशारामजी बापू के खिलाफ किया गया केस फर्जी है । उनके खिलाफ मुकदमा चलाने में जनता के पैसों का दुरुपयोग होता है । यह बिगाड़ नहीं किया जाना चाहिए ।'' - सुप्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी

पृष्ठ ६

देश-विदेश में मनाये गये गुरुपूर्णिमा महोत्सव की कुछ झलकें

(शेष तस्वीरें आवरण पृष्ठ ३ पर)

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २५ अंक : १ मूल्य : ₹ ६

भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २७२)

प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०१५

श्रावण-भाद्रपद वि.सं. २०७२

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम

प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान

मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा

प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)

मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५

सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी

सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा

संरक्षक : श्री जमनादास हलाटवाला

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : ₹ ६० /-

(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-

(३) पंचवार्षिक : ₹ २२५/-

(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : ₹ ३०० /-

(२) द्विवार्षिक : ₹ ६०० /-

(३) पंचवार्षिक : ₹ १५०० /-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ २०

(२) द्विवार्षिक : US $ ४०

(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).

फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.

e-mail: ashramindia@ashram.org

web-site : www.rishiprasad.org
www. ashram.org

रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० (केवल मंगल, गुरु, शनि)

रोज सुबह ६-३०

रोज सुबह ७-३० व रात्रि १०

चैनल www. ashram.org पर उपलब्ध

इंटरनेट टीवी

इस अंक में

बापूजी ने जीने का सही ढंग सिखाया, जीवन का उद्देश्य समझाया

(गतांक से आगे)

आत्मनिर्भरता की बतायी सुंदर युक्ति : करदर्शन

प्रातः उठकर करदर्शन करने का शास्त्रीय विधान बड़ा ही अर्थपूर्ण है। इससे मनुष्य के हृदय में आत्मनिर्भरता और स्वावलम्बन की भावना का उदय होता है। करदर्शन की सुंदर युक्ति बताते हुए पूज्य बापूजी कहते हैं : ''ध्यान के बाद बिस्तर पर ही तनिक शांत बैठे रहकर फिर अपनी दोनों हथेलियों को देखें और यह श्लोक बोलें :

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम्॥

'हथेली के अग्रभाग में लक्ष्मी देवी का निवास है, मध्यभाग में सरस्वती देवी हैं और मूलभाग में भगवान गोविंद का वास है इसलिए प्रातःकाल में करदर्शन करना चाहिए।'

इस प्रकार सुबह-सुबह में अपनी हथेलियों को देखकर भगवान नारायण का स्मरण करने से अपना भाग्य खुलता है।

बिन पैसे की दवा

भगवान को प्रार्थना करके हाथों की दोनों हथेलियाँ आपस में रगड़ें और मन-ही-मन भावना करें : **'ॐ ॐ ॐ मेरी आरोग्य शक्ति जग रही है ।'** फिर जहाँ भी शरीर में तकलीफ हो, वहाँ हथेलियाँ लगाने से आरोग्य शक्ति की सूक्ष्म तरंगें उसे मिटाने में बड़ी मदद करती हैं। जिसको हथेलियों को रगड़ते हुए 'ॐ ॐ ॐ...' करके हाथ मुँह पर घुमाने की युक्ति आ गयी, उसका चेहरा प्रभावशाली हो जाता है। आँखों पर दोनों हथेलियों को रखकर संकल्प करते हैं कि **'ॐ ॐ ॐ मेरी नेत्रज्योति बढ़ रही है'** तो आँखों की रोशनी बरकरार रहती है, बढ़ती है। माथे पर घुमायें, जहाँ चोटी रखते हैं वहाँ घुमायें और चिंतन करें कि **'ॐ ॐ ॐ मेरी स्मृतिशक्ति, निर्णयशक्ति का विकास हो रहा है ।'** तो इनका विकास होता है। मानसिक तनाव दूर होता है। मानसिक तनाव का मुख्य कारण है मलिन चित्तवृत्तियाँ। भगवान का नाम जपने से मलिन चित्तवृत्तियाँ भाग जाती हैं। घृणा, ईर्ष्या, मोह, लोभ, काम, अहंकार, चुगली, लिप्सा (कामना), परिग्रह (संग्रह) - इनसे तनाव होता है और ॐकार का उच्चारण करने से ये सारे तनाव भाग जाते हैं तथा सारी बीमारियों की जड़ें उखड़ जाती हैं।
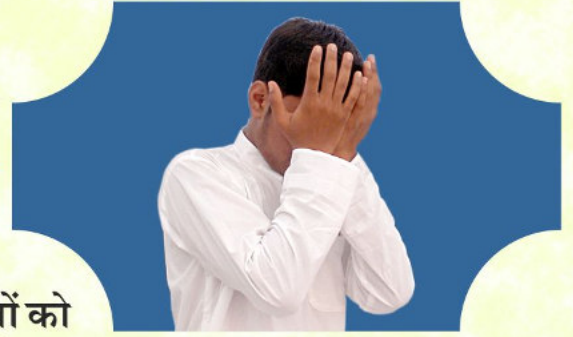
लगता तो साधारण प्रयोग है लेकिन इतने सारे फायदे होते हैं कि डॉक्टरों की पकड़ में नहीं आते हैं। इससे मन की मलिनता भी दूर हो जाती है, अंतर्यामी प्रसन्न होते हैं और दिव्य शक्तियों का संचार होता है। **('हस्त चिकित्सा' की विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें आश्रम की पुस्तक आरोग्यनिधि, भाग-१, पृष्ठ १७७)**

विघ्न-बाधाओं व दुर्घटना से बचने का उपाय बताया

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

रोज सुबह उठने पर अथवा घर से बाहर जाते समय एक बार इस मंत्र का जप कर लें तो विघ्न-बाधारहित, दुर्घटनारहित गाड़ी अपने रास्ते सफर करती रहेगी। और जीवन की शाम होने के पहले रोज उस त्र्यम्बक (परमात्मा) में थोड़ी देर शांत रहा करें।''

धरती माता के प्रति कृतज्ञ बनना सिखाया

पृथ्वी मातास्वरूप है। पृथ्वी से ही हमारा जीवन चलता है और वही हमारा सारा भार उठाती है। पृथ्वी से ही हमें अन्न, जल, औषधियाँ आदि प्राप्त होते हैं। अतः हममें अपने को कुछ देनेवाले के प्रति कृतज्ञता का भाव बना रहे, हम कृतघ्न न बनें इसलिए पृथ्वी से क्षमा-प्रार्थना करना सन्मति है, सद्भाव है। पूज्य बापूजी कहते हैं : ''सुबह बिस्तर से पृथ्वी पर पैर रखने से पहले उन्हें नमस्कार करें। फिर शांतचित्त हो के अपने इष्टदेव का सुमिरन कर मंत्रजप करके जिस नथुने से श्वास चल रहा हो, उसी तरफ का हाथ चेहरे के उसी तरफ के भाग पर घुमायें और उस ओर का पैर धरती पर पहले रखें तो मनोरथ सफल होते हैं। अर्थात् दायाँ नथुना चलता हो तो दायाँ पैर और बायाँ चलता हो तो बायाँ पैर धरती पर पहले रखें।

बापूजी ने दिया पूरे दिन को मंगलमय बनाने का पाठ

देखो, मैं आपको साधना का एक पाठ बता रहा हूँ। सुबह उठो तो गेहूँ के, चने के, मूँग के, मटर के ४-४ दाने... मैं ज्यादा बोलूँ और आप कम डालोगे तो सिकुड़ोगे... मैं ४ बोलता हूँ, आप चाहे २५ लो ईश्वर के लिए, 'लो प्रभुजी ! ये दाने मैं आपको अर्पण करता हूँ।' फिर चाहे गाय को दो, चाहे पक्षियों को दो लेकिन '४ दाने प्रभुजी ! आपके लिए। ४ मिनट प्रभु ! आपके ॐ आनंद... ॐ शांति... ॐ माधुर्य... में। आज चाहे दुःख आये, सुख आये - सब आनेवाला जायेगा लेकिन आत्मा-परमात्मा का संबंध शाश्वत है यह मैं समझूँगा, याद रखूँगा।' इससे आपका पूरा दिन मंगलमय होगा। स्वास्थ्य का रस बनने लग जायेगा। गलती करने की आदत कम होने लग जायेगी। निस्सार चीजों से आपका मन उपराम हो जायेगा और सार में तुम शुक्रगुजार बनते जाओगे।''

गुरुपूर्णिमा पर्व पर पूज्य बापूजी का पावन संदेश

॥ ॐ आनंद... ॐ माधुर्य... ॐ उन्नति ॥

छांदोग्य उपनिषद् का वचन है : महामनाः स्यात्। 'बड़े मनवाले बनो।' सर्दी, गर्मी, बारिश की निंदा न करो, मनुष्यों, पशु, पक्षी, जीव-जंतुओं की निंदा न करो। मांस-भक्षण न करो, मदिरा न पियो। निंदा और मांस-मदिरा बुद्धि को तुच्छ बनाते हैं।

गीता (१८.५) कहती है :

यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।

'यज्ञ, दान और तप - ये तीनों ही कर्म बुद्धिमान पुरुषों को पवित्र करनेवाले हैं।'

पवित्र बुद्धि परमात्मा के आनंद में प्रतिष्ठित होती है। भगवान व्यासजी कहते हैं और मैं भी कहता हूँ - रात्रि को सोते समय और सुबह उठते समय 'मैं प्रभु का हूँ, प्रभु मेरे हैं। वे आनंदस्वरूप हैं तो मैं भी आनंदस्वरूप हूँ, सुख-दुःख आ के चले जाते हैं, मैं साक्षी, आनंदस्वरूप ज्यों-का-त्यों हूँ।' ऐसा अभ्यास करनेवाला शीघ्र ही मुझे पाता है, मुझमय हो जाता है। यही है भगवान से नजर मिलाना, गुरु से नजर मिलाना। गुरु को जगत जैसा दिखता है, भगवान को जगत जैसा दिखता है, तुम्हें भी वैसा ही दिखने लग जाय। फिर शोक, मोह, चिंता, भय, दुःख और सुख ऐसे उड़ जायेंगे जैसे आग से कपूर। गीता (४.३७) कहती है :

ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा।

'ज्ञानरूप अग्नि सम्पूर्ण कर्मों को भस्ममय कर देती है।'

दि. ३१-७-२०१५ का पावन गुरुपूर्णिमा पर्व पावन संदेश देता है : निंदा न करो, फरियाद न करो, एक-दूसरे को बदनाम न करो और अपने आनंदस्वरूप को जगाओ। तुम्हारे जीवन में प्रभु का नित्य नवीन रस उभरता रहे। ॐ ॐ आनंदम्...

इस संदेश को विश्वभर में फैलाओ। निंदा किसीकी हम किसीसे भूलकर भी ना करें। सत्य बोलें झूठ त्यागें, मेल आपस में करें। हे प्रभु ! आनंददाता !! ज्ञान हमको दीजिये। समझ गये साँईं के प्यारे, दिल के दुलारे लाला-लालियाँ ! मेरी चिंता न करो, मेरे आत्मस्वभाव का चिंतन करो। मेरी नजर से नजर मिलाओ और मुक्त हो जाओ। यही भगवान वेदव्यास चाहते हैं, इष्टदेव और गुरुदेव चाहते हैं। व्यासजी से, कृष्णजी से, गुरुजी से अपनी समझ साझा करो।

यह केस तो तुरंत रद्द होना चाहिए

- सुप्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी

सुप्रसिद्ध न्यायविद् सुब्रमण्यम स्वामी ने पूज्य बापूजी के खिलाफ हुई अंतर्राष्ट्रीय साजिश का खुलासा करते हुए कहा कि ''विदेश से आये हुए धर्म-परिवर्तन करनेवाले लोगों का आशारामजी बापू ने डटकर मुकाबला किया । गुजरात और अन्य क्षेत्रों में लालच देकर धर्म-परिवर्तन करने के प्रयास को विफल किया । इससे वेटिकन में नाराजगी आयी । उसके बाद किसी तरीके से बापूजी को बदनाम करने के लिए प्रयास चला ।'' सुब्रमण्यम स्वामी ने यह बात औरंगाबाद में हुए एक सम्मेलन के दौरान कही ।

पूज्य बापूजी को ऐसे षड्यंत्र में फँसाने के लिए बहुत पहले से और बड़े स्तर पर कोशिशें की जा रही थीं । इस संदर्भ में सुब्रमण्यम स्वामी ने कहा : ''मैंने बापूजी को एक बार जब हम हवाई जहाज में साथ आ रहे थे तब बताया कि सत्ता (तत्कालीन सत्ताधारी सरकार) में जो लोग हैं, वे उनसे चिढ़े हुए हैं और कुछ भी कर सकते हैं । आखिर में वही हुआ जिसका मैं संदेह कर रहा था ।''

सुब्रमण्यम स्वामी इस बोगस केस की एक-एक पर्त खोलते हुए बोले : ''मैंने केस को पढ़ा । देखा कि लड़की ने जोधपुर के पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज नहीं की, वह दिल्ली में दर्ज की । मेडिकल जाँच रिपोर्ट में साफ लिखा हुआ है कि कोई दुष्कर्म नहीं हुआ है । फिर जोधपुर पुलिस ने अलग से एक धारा जोड़ी कि लड़की १८ साल से कम उम्र की है । बलात्कार तो नहीं हुआ लेकिन उन्होंने हाथ लगाया । लड़की कहती है : 'हाथ लगाया और किसीने देखा नहीं । माँ दरवाजे के बाहर बैठी है ।' लड़की चिल्लाती तो निश्चित तौर पर वह (माँ) अंदर आती ।''

देशहित एवं सत्य के पक्ष में मुकदमे लड़नेवाले सुब्रमण्यम स्वामी ने इस मुकदमे के पुलिस द्वारा नजरअंदाज किये गये पहलुओं को उजागर करते हुए कहा : ''लड़की के टेलीफोन रिकॉर्ड्स से पता लगा कि जिस समय पर वह कहती है कि वह कुटिया में थी, उस समय वह वहाँ थी ही नहीं ! उसी समय बापूजी सत्संग में थे और आखिर में मँगनी के कार्यक्रम में व्यस्त थे । वे भी वहाँ कुटिया में नहीं थे । यह केस तो तुरंत रद्द होना चाहिए ।''

सुब्रमण्यम स्वामी ने सरकार से माँग करते हुए कहा : ''मैंने गृहमंत्री राजनाथजी से कहा कि आशारामजी बापू के खिलाफ किया गया केस फर्जी है । उनके खिलाफ मुकदमा चलाने में जनता के पैसों का दुरुपयोग होता है । यह बिगाड़ नहीं किया जाना चाहिए ।''

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

नीचे दिये गये रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए इस अंक को ध्यानपूर्वक पढ़िये । उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे ।

(१) 'भविष्य पुराण' में लिखा है कि .... का व्रत अकाल मृत्यु नहीं होने देता है ।

(२) आप .... में जैसा संकल्प करो, वैसा .... में घटित हो जाता है ।

(३) भारत की समस्त भाषाएँ .... से जीवन-रस प्राप्त करती हैं ।

(४) सारे दुःखों का मूल अगर खोजा जाय तो .... है ।

षड्यंत्रकारियों का फिर एक नया कारनामा

दिनांक २० जून को जोधपुर सत्र न्यायालय ने पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की जमानत के लिए लगायी अर्जी की सुनवाई में कहा था कि उच्चतम न्यायालय के निर्देशानुसार ६ मुख्य गवाहों की गवाही पूर्ण होने के बाद जमानत के लिए अर्जी डाल सकते हैं। तदनुसार छठी गवाह सुधा पटेल की गवाही ८ जुलाई २०१५ को हुई और पुलिस द्वारा उसके नाम से बनाये गये फर्जी बयान की पोल खुल गयी (पृष्ठ ९)। श्री सुब्रमण्यम स्वामी बापूजी की जमानत के लिए नयी अर्जी तैयार कर ही रहे थे कि १० जुलाई को शाहजहाँपुर (उ.प्र.) से एक गवाह कृपाल सिंह, जो एक साल से अधिक समय पहले ही गवाही दे चुके थे, पर जानलेवा हमले का समाचार आ गया।

यह सब क्या है ? यह केवल संयोगभर नहीं है कि जब-जब भी बापूजी की जमानत की कोशिश की जाती है, तभी इस प्रकार के समाचार आ जाते हैं और बापूजी के खिलाफ नकारात्मक माहौल तैयार करने की एक नयी साजिश शुरू हो जाती है। यह सब बापूजी के विरुद्ध षड्यंत्र कर रहे अति शक्तिशाली लोगों का ही एक नया कारनामा है, जो अपने इस्तेमाल किये जा चुके मोहरों पर हमले करवाकर इससे पूर्व भी बापूजी की रिहाई में अड़ंगे डालते रहे हैं।

अपराध अनुसंधान विषयक एक सर्वमान्य सिद्धांत यह भी है कि किसी भी अपराध की जाँच शुरू करने से पूर्व पुलिस या जाँच एजेंसी को यह जरूर ध्यान में रखना चाहिए कि ऐसी आपराधिक घटना से 'लाभ' किसको मिला है ? इस सिद्धांत के अनुसार भी बापूजी के विरुद्ध बनाये गये बोगस केसों के गवाहों पर हो रहे हमलों का लाभ सीधा षड्यंत्रकारियों को ही मिलता रहा है। ऐसे में जमानत चाहनेवाला कोई ऐसी नादानी क्यों करेगा ?

इस प्रकार की घटनाओं के परिणाम को देखते हुए दिनांक १८ सितम्बर २०१४ को संत श्री आशारामजी बापू ने स्वयं अपने हस्ताक्षर से जोधपुर की संबंधित अदालत में एक प्रार्थना-पत्र देकर मा. न्यायाधीश महोदय से अपने केस से संबंधित सभी गवाहों को कड़ी सुरक्षा देने की माँग की थी तथा न्यायालय ने पुलिस व प्रशासन को तुरंत इस विषय में कार्यवाही करने के निर्देश भी दिये थे। इस केस से संबंधित कई गवाहों को पुलिस सुरक्षा मिली भी हुई है।

किंतु पुलिस सुरक्षा होने के बावजूद भी इस प्रकार की घटनाएँ जारी रहना यहाँ दो बातों को जरूर रेखांकित कर रहा है - एक तो बापूजी के विरुद्ध षड्यंत्र में शामिल लोग पुलिस-प्रशासन से भी अधिक शक्तिशाली हैं। दूसरा, षड्यंत्रकारी किसी भी कीमत पर बापूजी को कारागार से बाहर नहीं आने देना चाहते।

- श्री अशोक पंडित

चेयरमैन एवं प्रधान सम्पादक 'आदर्श पंचायती राज' पत्रिका ग्रुप

हमलों के पीछे का रहस्य

षड्यंत्रकारियों का मोहरा बने भोलानंद गुप्ता ने गवाहों पर हो रहे हमलों के पीछे का रहस्य उजागर करते हुए हजारों लोगों के सामने आकर कहा था (सूरत, १६ मार्च २०१४, विडियो लिंक - http://goo.gl/daQ3Tp) कि ''षड्यंत्रकारी लोगों का यह कहना था कि 'गुप्ताजी ! देखो, आप फँसते हो या हममें से कोई भी अगर पकड़ा गया तो हम एक-दूसरे को गोली मार देंगे या चाकू से वार कर देंगे, ऐसा कुछ कर लेना अथवा हम करवा देंगे। फिर हम लोग केस बना के बापू पर डाल देंगे।' ऐसी इनकी पूरी प्लानिंग थी।'' और उनकी यह प्लानिंग सभी लोग देख रहे हैं।

'उनके हाथ लम्बे हैं, लम्बी साजिश है...'

पूज्य बापूजी ने मीडिया से हुई बातचीत में कहा कि ''वह (कृपाल सिंह) तो १२ महीने से भी पहले बयान देकर गया। हमारे खिलाफ भी नहीं दिया और फिर भी ये (हमले) होते हैं तो जो करवाते हैं, उनकी जाँच हो, सत्य का सत्य हो जायेगा। हमारा बाहर निकलने का समय आता है तब वे करवाते हैं। हम क्यों करवायेंगे ! जिन्होंने मुझे यहाँ भेजा है, वे ही करवाते हैं। उनके हाथ लम्बे हैं, लम्बी साजिश है। भगवान सबका मंगल करें।''

आश्रम मीडिया-प्रवक्ता नीलम दुबे ने कहा : ''जब-जब पूज्य बापूजी की जमानत के आसार बनते हैं, तभी गवाहों पर हमले होते हैं। हमारे लिए तो गवाहों का सुरक्षित रहना जरूरी है क्योंकि गवाहों के सुरक्षित रहने से केस की सच्चाई बाहर आयेगी; वे ही हैं जो साफ-साफ बतायेंगे कि किसने किस तरह से उनसे बयान दिलवाया है और किस तरह खरीद-फरोख्त हुई है, किस तरह से बापूजी को फँसाने का रास्ता बनाया गया है।''

कृपाल सिंह को गवाही दिये जुलाई २०१५ में एक वर्ष से अधिक समय हो गया है। उन्होंने गवाही में बापूजी या संस्था के खिलाफ कुछ बोला नहीं है। इनकी हत्या सालभर के बाद वे ही लोग करवा सकते हैं जिन्हें जब भी बापूजी के बाहर आने का माहौल बनता है, तब स्टंट करना होता है बापूजी को बदनाम करने का। जैसे मुजफ्फरनगर का अखिल गुप्ता अहमदाबाद केस में गवाह बना था। इस केस में शिकायत दर्ज करानेवाली महिला ने कोर्ट में गुहार लगायी कि उसने किसीके दबाव में आकर वह शिकायत लिखवायी थी। वह अपना पहलेवाला बयान बदलना चाहती है, केस की सच्चाई उजागर करना चाहती है। फिर अहमदाबाद के केस की गवाही की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। ऐसे अवसर पर हम लोग गवाह को क्यों मारेंगे या मरवायेंगे ? अखिल तो सेवा में हीरा था। सेवा करने से पहले सेवा की योजना बना लेता था।

हिन्दू धर्म को नीचा दिखाने के लिए हिन्दू संतों को बदनाम करने की योजना थी। भगवान का नहीं तो गॉड का डर तो रखो ! कर्म की गति गहन है। देर-सवेर नीच कर्म करने-करानेवाले को नीच योनियों में जाना ही पड़ता है।

– सम्पादक

(संकलक : श्री रू.भ. ठाकुर)

बापू के दुश्मन करा रहे गवाहों की हत्या

दैनिक जागरण, २६ जुलाई २०१५। कृपाल सिंह मर्डर में आरोपी नारायण पांडे ने पुलिस के दावे को सिरे से खारिज कर दिया। उसने बताया कि आशाराम बापू के जेल से बाहर आने के दिन बने थे। ठीक उससे पूर्व कृपाल की हत्या कर दी गयी। इससे पूर्व भी जमानत की स्थिति बनने पर एक गवाह को निशाना बनाया गया था। जाहिर है बापू का कोई दुश्मन मौके का फायदा उठा रहा है।

पूज्य बापूजी द्वारा जोधपुर न्यायालय परिसर से दिये गये संदेशों के अंश

चैनलवाले : भक्तों को सूरज की ओर इशारा करके क्या संदेश दिया ?

पूज्य बापूजी : सूर्यनारायण चमक रहे हैं, ऐसे ही अपने कर्मों से चमको। चाहे कितने भी लांछन लगें, निर्भीक रहो।

पूज्यश्री : ताजा खबर सुना दूँ ?

चैनलवाले : हाँ, सुनाइये बापू !

पूज्यश्री : हर साल दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता होती है। इस साल भी हजारों विद्यालयों में होगी। इसमें लाखों विद्यार्थी बैठते हैं और कई (हजारों) पुरस्कृत होते हैं। इससे आनेवाली पीढ़ी बहुत शक्तिशाली, प्रतिभाशाली होगी। मैंने दर्जनों बार दिल्ली के सत्संग में कहा था मनमोहन सरकार को कि ''आप कुछ समय सँभाल लो, फिर हमारे बच्चे सँभाल लेंगे।'' वे बच्चे तैयार हो रहे हैं। उसके लिए थोड़ी-बहुत कुर्बानी हमारी... खुशी की बात है।

चैनलवाले : और भी जो बच्चे पढ़ रहे हैं उनके लिए आप क्या कहना चाहेंगे ?

पूज्यश्री : बच्चे लगे रहें, और दिव्य बनते जायेंगे। भगवान उनकी मदद करते हैं, जो खुद की मदद करते हैं, शास्त्रसम्मत पुरुषार्थ करते हैं। अहमदाबाद गुरुकुल के बच्चों ने पानी से गाड़ी चलाने की खोज की, और भी मानव पिरामिड आदि क्या-क्या बनाया... उन बच्चों को तो धन्यवाद है लेकिन अहमदाबाद गुरुकुल या देशभर के ही नहीं, विश्वभर के सभी बच्चे भगवान के हैं। सभी महान बनें।

चैनलवाले : बापू ! गवाहों पर हमले... ?

पूज्यश्री : हमने तो बोला था कि हमारे गवाहों को कुछ भी सुरक्षा चाहिए तो दो। अब कोई भी कुछ करे तो मेरी बदनामी क्यों करते हैं ? इसके पीछे बड़ी कूटनीतियाँ और राजनीतियाँ चल रही हैं। कितना मेरे को कोई सताता है, हम जानते हैं।

चैनलवाले : कौन कर रहा है बापू ! राजनीति ?

पूज्यश्री : अरे सतानेवाले सता रहे हैं, सब जानते हो तुम लोग। चार संस्कृतियाँ थीं - रोम, यूनान, मिश्र और भारत की। रोम, यूनान, मिश्र को तो उन्होंने मिटा दिया, अभी केवल भारतीय संस्कृति है। उसको बचाने के लिए मैं लगता हूँ इसलिए उनकी आँख की कंकड़ी बना हूँ। बस, और कुछ भी नहीं है। ये (आरोप) सब बनावटी हैं। सब भक्त मौज में रहना, देर-सवेर सत्य चमकेगा।

चैनलवाले : बापूजी ! आज पूनम है।

पूज्यश्री : आज पूनम है तो पूनम का शुभ संदेश है - गुलाब होकर महकोगे सब, तुम्हारी तपस्या है। सबका मंगल, सबका भला हो। सब दिन गुजर जायेंगे। सत्यस्वरूप ईश्वर के सिवाय सब सपना, परमात्मा अपना।

***

चैनलवाले : बापूजी ! कुछ संदेश ?

पूज्य बापूजी : मनुष्य-जन्म दुर्लभ है । अपने आत्मा को जानकर मुक्त हो जाओ । खींचातानी, आरोप-प्रत्यारोप में काहे को समय बरबाद करना ! सबका भला हो !! हमारे मन में तो यही है । जिसको जँचे, ले लो । किसीका बुरा चाहो नहीं, किसीका बुरा सोचो नहीं, किसीका बुरा करो नहीं और कोई करते हैं तो उदारता से माफ कर दो, और क्या !

चैनलवाले : बापूजी ! गुरुपूनम आ रही है ।

पूज्य बापूजी : 'जोगी रे म्हारे हिवड़ा मां ज्योत जगाय जा ।' गुरुपूनम अर्थात् लघुता से पार हो जाओ, छोटी-छोटी बातों में उलझो नहीं, उलझाओ नहीं । लघुता से पार । गुरुपूनम का संदेश है - 'गु' माना अंधकार, 'रु' माना प्रकाश । अविद्या-अंधकार को मिटा के आत्मा-परमात्मा का प्रकाश पाने की खबर देनेवाले गुरुपूनम पर्व की सभीको खूब-खूब बधाई !

राष्ट्रीय आविष्कार अभियान में छाया रहा संत श्री आशारामजी गुरुकुल

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिल्ली में ९ जुलाई २०१५ को राष्ट्रीय आविष्कार अभियान का आरम्भ किया गया । राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) द्वारा इसके लिए देशभर के हजारों विद्यालयों में से जिन १० विद्यालयों की कृतियों का चयन किया गया, उस सूची में प्रथम क्रमांक पर सूचीबद्ध किया गया संत श्री आशारामजी गुरुकुल, अहमदाबाद !

वैज्ञानिक व पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम तथा अनेक केन्द्रीय मंत्रियों द्वारा दिल्ली में इस अभियान का शुभारम्भ किया गया । उपस्थित मान्यवरों, हजारों विद्यार्थियों, अधिकारियों व नागरिकों के लिए गुरुकुल की आयनोक्राफ्ट कृति आकर्षण का केन्द्र बनी रही ।

आयनोक्राफ्ट में ऐसी तकनीकी इस्तेमाल की गयी है जिससे विमान को बिना ईंधन, बिना इंजन तथा बिना मोटर के उड़ाया जाता है । सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तिका 'राष्ट्रीय आविष्कार अभियान' के पृष्ठ क्रमांक १४ व १५ पर आयनोक्राफ्ट का फोटोसहित विवरण छापा गया है । पूरे गुजरात से चयनित यह एकमात्र कृति है । सरकार द्वारा इस कृति को चंडीगढ़ की 'विज्ञान प्रदर्शनी-२०१४' तथा मुंबई में आयोजित 'इंडियन साइंस काँग्रेस-२०१५' के लिए भी चुना गया था । 'प्लाज्मा अनुसंधान परिषद' ने भी इस कृति को वर्ष २०१५ में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया है । इस प्रकार संत श्री आशारामजी गुरुकुल देश को उसका नाम रोशन करनेवाले केवल वैज्ञानिक ही नहीं अपितु विश्व में एक कीर्तिमान स्थापित करनेवाला 'बहुमंजिला मानव पिरामिड' बनानेवाले खिलाड़ी, संस्कार-प्रदाता आचार्य, स्वदेशी चिकित्सा-पद्धतियों को बढ़ावा देनेवाले चिकित्सक तथा अन्य विभिन्न क्षेत्रों के श्रेष्ठतम नागरिक प्रदान करेंगे ।

शुभ भाव व पवित्रता देनेवाला पर्व

(रक्षाबंधन : २९ अगस्त)

राखी पूनम उच्च उद्देश्य से मन को बाँधने की प्रेरणा देनेवाली पूनम है। बहन भाई के हाथ पर राखी बाँधती है। राखी महँगी है या सस्ती इसका महत्त्व नहीं है, सादी-सूदी राखी हो, सादा रंगीन धागा हो, चल जाता है। शुभ भाव को दिखावे में नहीं बदलना चाहिए बल्कि सात्त्विकता व पवित्रता का सम्पुट देना चाहिए।

बहन भावना करती है कि 'मेरा भैया विमल विवेकवान हो।' रक्षाबंधन महोत्सव फिसलते हुए आस-पड़ोस के युवक-युवतियों के लिए सुरक्षा की सुंदर खबर लानेवाला महोत्सव है। वयस्क बहन-भाई पड़ोस में रहें, हो सकता है कि ऊर्जा का स्रोत यौवन में विकारों की तरफ जोर मारता हो तो कहीं वे फिसल न जायें इसलिए पड़ोस की बहन पड़ोस के भाई को राखी बाँधकर अपनी तो सुरक्षा कर लेती है, साथ ही भाई के विचारों की भी सुरक्षा कर लेती है कि पड़ोस का भाई भी संयमी बने, सदाचारी बने, तेजस्वी बने, दिव्यता की तरफ चले।

राखी दिखता तो धागा है लेकिन उस धागे में संकल्पशक्ति होती है, शुभ भावना होती है। शची (इन्द्र की पत्नी) ने देखा कि इन्द्र दैत्यों के साथ जूझ रहे हैं, कहीं पराजय की खाई में न गिर जायें इसलिए शची ने इन्द्र को राखी बाँधी। अपना शुभ संकल्प किया कि 'मेरे पतिदेव विजेता बनें।'

मेरे गुरुदेव (साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज) अहमदाबाद पधारे थे, तब उनके चरणों में जूनागढ़ का एक प्राध्यापक और प्राचार्य आये। बोले : "साँईं! भाई तो बहन की रक्षा करे लेकिन हम भी तो रक्षा चाहते हैं। इन्द्र को युद्ध में विजय चाहिए लेकिन हमें तो विकारों पर विजय चाहिए। सद्गुरुदेव! आप हमारी विषय-विकारों से रक्षा करते रहें। जब तक हम ईश्वर तक न पहुँचें, तब तक गुरुवर! आप हमें सँभालना।

गुरुजी अमारी संभाळ ले जो रे।
दिलडां मां रहीने दोरवणी देजो रे॥"

'गुरु के दिव्य ज्ञान का प्रचार-प्रसार हो, लाखों लोग गुरुदेव के दैवी कार्य से लाभान्वित हों' - ऐसा शुभ भाव मन-ही-मन करके साधक गुरु को राखी बाँध सकता है और गुरु भी शुभ संकल्प करें कि 'इनकी विषय-विकारों से, अविवेक व अशांति से सुरक्षा हो और विमल विवेक जागे।'

इस पूनम को 'नारियली पूनम' भी कहते हैं। सामुद्रिक धंधा करनेवाले लोग जलानां सागरो राजा... सारे जलाशयों में सागर राजा है... इस भाव से उसे नारियल अर्पण करते हैं कि 'अगर आँधी-तूफान आये तो हमारी देह की बलि न चढ़े इसलिए हम आपको यह बलि अर्पण कर देते हैं।' यह कृतज्ञता व्यक्त करने का भी उत्सव है।

ब्राह्मण 'श्रावणी पर्व' मनाते हैं और जनेऊ बदलते हैं। जनेऊ में ३ धागे होते हैं। १-१ में ९-९ गुण... ९ ‌ ३ = २७. प्रकृति के इन गुणों से और बंधनों से पार होने के लिए जनेऊ धारण किया जाता है। 'जनेऊ का धागा तो भले पुराना हो गया इसलिए बदल देते हैं लेकिन हमारा उत्साह तो जैसे पूनम का चाँद पूर्ण विकसित है, ऐसे ही धर्म और कर्म में हमारा उत्साह बना रहे, साहस और प्रेम बना रहे' - यह भावना करते हैं।

श्रीकृष्ण अवतार का जीवन-संदेश

- पूज्य बापूजी

मानो न मानो यह हकीकत है...

भगवान श्रीकृष्ण के जन्म को ५२०० से अधिक वर्ष बीत गये लेकिन अब भी जन्माष्टमी हर वर्ष नित्य नवीन रस, नयी उमंग, नया आनंद-उल्लास ले आती है। जिन्होंने अपने उल्लसित स्वभाव का अनुभव किया है, वे काल के घेरे में नहीं बाँधे जाते हैं। कृष्ण थे तब तो उल्लास, आनंद और माधुर्य था लेकिन ५-५ हजार वर्ष बीत गये तब भी आज भी उनकी जन्माष्टमी और उनकी याद उल्लास, आनंद, माधुर्य और रसमय जीवन देने का सामर्थ्य रखती है।

मानो न मानो यह हकीकत है।
आनंद, उल्लास, आत्मरस मनुष्य की जरूरत है ॥

अगर आपको अंतरात्मा का सुख नहीं मिलेगा तो चाय छोड़कर आदमी कॉफी पियेगा, कॉफी छोड़कर और कुछ पियेगा लेकिन पिये बिना नहीं रहेगा। अगर असली मिल जाय तो नकली छूट जाय। इस सिद्धांत से श्रीकृष्ण ने सबको असली रस की तरफ आकर्षित किया।

संत-वचनों के अनुगामी

'श्रीमद्भागवत' में आता है कि नंदबाबा को अजगर ने पकड़ लिया। ग्वाल व गोप अपनी लकड़ियों से अजगर को मारते हैं फिर भी वह नंदबाबा को नहीं छोड़ता। नंदबाबा घबराये और श्रीकृष्ण को याद किया। श्रीकृष्ण आये और अजगर के सिर पर पैर लगा दिया। अजगर की सद्गति हुई और वह अजगर अपने असली रूप में प्रकट होकर बोला : ''मैं सुदर्शन नाम का विद्याधर था। अंगिरा गोत्र के ऋषियों का मैंने अपमान किया था, उन्होंने शाप दिया कि तू अजगर जैसा व्यवहार करता है तो जा बेटे ! तुझे अजगर की योनि मिलेगी।''

मैंने उनसे प्रार्थना करके क्षमा-याचना की तो उन्होंने कहा : ''जब कृष्णावतार होगा और कृष्ण तुझसे अपना चरणस्पर्श करेंगे तभी तेरी सद्गति होगी।''

संतों के वचनों को सत्य करनेवाला, भक्तों को रस प्रदान करनेवाला, हिम्मत, साहस और शक्ति भरनेवाला तथा अन्याय व दुर्गुणों को ललकारनेवाला अवतार कृष्ण-अवतार है।

संकीर्णता से व्यापकता की ओर

कृष्ण अवतार प्रेरणा देता है कि आपका नियम, व्रत और सिद्धांत अच्छा है लेकिन जब 'बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय' समाजरूपी देवता की सेवा करने की बात आती है और अंतरात्मा की तरफ आगे बढ़ने की बात आती है तो फिर आपकी, कुटुम्ब की, पड़ोस की जो छोटी-मोटी अकड़-पकड़ है, उसको भूल जाना चाहिए। कुटुम्ब का भला होता हो तो व्यक्तिगत भलाई की बात को गौण कर देना चाहिए और पूरे पड़ोस का भला होता हो तो कुटुम्ब की भलाई का मोह छोड़ देना चाहिए। गाँव का भला होता हो तो पड़ोस का और राज्य का भला होता हो तो गाँव का मोह छोड़ देना चाहिए। राष्ट्र का भला होता हो तो राज्य का और मानव-जाति का भला होता हो तो राष्ट्र का भी ज्यादा मोह न रखें। और महाराज ! विश्वेश्वर की प्राप्ति का रास्ता आता हो तो विश्व भी कुछ नहीं, विश्वेश्वर ही सार है इस दृष्टि को आप आगे बढ़ाइये।

महान आत्मा बनने का आदर्श

बुधवार का दिन, रोहिणी नक्षत्र... परात्पर परब्रह्म सगुण साकार रूप में आये। कंस जैसे महत्त्वाकांक्षी लोगों ने छोटे-छोटे सज्जन राजाओं को कैद कर लिया। दुर्योधन, जरासंध और शिशुपाल जैसे अभिमानियों ने जब समाज को अपने अहंकार के अधीन करके ऐश करना चाहा, तब समाज उत्पीड़ित हुआ और समाज की प्रार्थना व पुकार पहुँची। जैसे किसी बड़े उद्योग में अस्त-व्यस्तता हो जाती है तो उद्योगपति स्वयं आकर मुआयना करते हैं, ऐसे ही व्यापक चैतन्य प्राणिमात्र के हृदय में होते हुए, अणु-परमाणु में व्याप्त होते हुए भी कभी-कभार प्रसंगोचित उस-उस समय की माँग के अनुरूप अवतरित होता है। वह अवतार मानव-जाति के लिए वरदानरूप है।

उग्रसेन राज्य दे रहे हैं लेकिन समाजहित की भावना से श्रीकृष्ण ने राजा बनना अस्वीकार किया। महान आत्माओं की यह पहचान है कि मान-अपमान में, सुख-दुःख में सम रहते हैं और छोटा कार्य करने में भी संकोच का अनुभव नहीं करते। श्रीकृष्ण जैसे महान आत्मा को घोड़ागाड़ी चलाने, घोड़ों की मालिश व मरहमपट्टी करने में संकोच नहीं होता।

श्रीकृष्ण ने समाज के हित के लिए राजसूय यज्ञ का आरम्भ करवाया। यज्ञ में ऊँची-ऊँची सेवा का, ऊँचे-ऊँचे पदों का औरों को मजा लेने दिया और स्वयं श्रीकृष्ण ने साधु-संतों के चरण धोने का काम करके अपने सरल स्वभाव का भी परिचय दिया।

हजार एकादशी का फल देनेवाला व्रत

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : ५ सितम्बर) - पूज्य बापूजी

जन्माष्टमी के दिन किया हुआ जप अनंत गुना फल देता है। उसमें भी जन्माष्टमी की पूरी रात जागरण करके जप-ध्यान का विशेष महत्त्व है। 'भविष्य पुराण' में लिखा है कि 'जन्माष्टमी का व्रत अकाल मृत्यु नहीं होने देता है। जो जन्माष्टमी का व्रत करते हैं, उनके घर में गर्भपात नहीं होता।'

एकादशी का व्रत हजारों-लाखों पाप नष्ट करनेवाला अद्भुत ईश्वरीय वरदान है लेकिन एक जन्माष्टमी का व्रत हजार एकादशी व्रत रखने के पुण्य की बराबरी का है। एकादशी के दिन जो संयम होता है उससे ज्यादा संयम जन्माष्टमी को होना चाहिए। बाजारू वस्तु तो वैसे भी साधक के लिए विष है लेकिन जन्माष्टमी के दिन तो चटोरापन, चाय, नाश्ता या इधर-उधर का कचरा अपने मुख में न डालें। इस दिन तो उपवास का आत्मिक अमृत पान करें। अन्न, जल तो रोज खाते-पीते रहते हैं, अब परमात्मा का रस ही पियें। अपने अहं को खाकर समाप्त कर दें

रसप्रद, आनंददायक पाठ - पूज्य बापूजी

प्रतिदिन भोजन से पहले 'श्री आशारामायणजी' की कहीं से भी शुरुआत करके कुछ पंक्तियाँ बोली जायें और बीच-बीच में कभी 'नमः पार्वतीपतये हर हर महादेव, कृष्ण-कन्हैया लाल की जय, रणछोड़राय की जय!' का उद्घोष करें तो कभी 'ॐ आनंद... ॐ माधुर्य... ॐ शांति... ॐ हरि... ॐ गुरु...' आदि बोलकर हास्य-प्रयोग करें। ऐसा ५-१० मिनट करके फिर भोजन करें। ऐसा करने से तुम्हें बहुत आनंद आयेगा। यह रसप्रद प्रयोग देशव्यापी, विश्वव्यापी हो जायेगा।

सावधान रहना

''हमारी रिहाई अथवा अन्य कोई बहाना बनाकर कोई चंदा माँगने आये तो उससे सावधान रहना। कोई माँगे तो तुरंत मुख्यालय खबर करें। तुम्हारे पैसों का दुरुपयोग न हो। कई ठग बापू का साधक होने का नाटक करते हैं, लूट भी चलाते होंगे। न ठगो न ठगे जाओ, न बेवकूफ बनाओ न बेवकूफ बनाये जाओ।''

आशाराम ॐ

(पूज्य बापूजी के हस्ताक्षर)

हार को बदल सकते हो जीत में !

- पूज्य बापूजी

आपके मन में अथाह सामर्थ्य है। आप मन में जैसा संकल्प करो वैसा शरीर में घटित हो जाता है। आप जैसा दृढ़ संकल्प करते हो वैसे ही बन जाते हो। अपने को निर्बल कहो तो संसार में कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो आपको बलवान बना सके। अपने सर्वशक्तित्व का अनुभव करो तो आप सर्वशक्तिमान हो जाते हो।

मैंने सुनी है एक घटना कि कुछ तैराक लोगों में स्पर्धा हो रही थी। अमुक तालाब में उस किनारे से चलेगा और इस किनारे आयेगा। दो आदमी लगे, बड़ा फासला था। एक तैराक के साथी नकारात्मकतावादी थे और दूसरे के उत्साह देनेवाले थे। जिसके साथी उत्साह देनेवाले थे वह तैरने में पिछड़ा हुआ, कमजोर था और जो तैरने में कुशल था उसके संगी-साथी ऐसे नकारात्मकतावादी थे : 'अरे क्या... मुश्किल है ! छोड़ दो... बेकार में डूब गये तो ! छोड़ दो... अपना क्या जाय, वह भले जा के मरे...'

स्पर्धा शुरू हुई। दूसरे छोर से दोनों आ रहे थे तो जो तैरने में कुशल था, वह थोड़ा आगे निकला और जो तैरने में कमजोर था, वह थोड़ा पीछे रह गया। लेकिन पीछेवाले को साथी अच्छे मिल गये कि 'अरे कोई बात नहीं, अभी आराम से आ रहा है लेकिन थोड़ी देर में जोर मारेगा, तू ही जीतेगा...' और थोड़ा बराबरी में करा दिया।

जो तैरने में कुशल था उसके दलवाले उसे बोले : ''अब तेरा जीतना मुश्किल है भाई ! हम तो समझा रहे थे, हमारी बात मानता तो अभी मुसीबत में नहीं पड़ता। देख, थक गया...'' वह बेवकूफों की बातों में आ गया, उसके लिए मुश्किल हो गयी और जिसके लिए मुश्किल थी, उसे हिम्मत बँधायी तो वह जीत गया।

आप जैसा सोचते हैं वैसा बन जाते हैं। अपने भाग्य के आप विधाता हैं। तो अपने जन्मदिन के दिन यह संकल्प करना चाहिए कि 'मुझे मनुष्य-जन्म मिला है, मैं हर परिस्थिति में सम रहूँगा। मैं सुख-दुःख को खिलवाड़ समझकर अपने जीवनदाता की तरफ यात्रा करता जाऊँगा। यह पक्की बात है ! हमारे साथ ईश्वर का असीम बल है। पिछला यश और इतिहास उनको मुबारक हो, अगला यश और इतिहास हमारे लिए खुला पड़ा है। पिछली सफलताओं पर पिछले लोगों को नाचने दो, अगली सफलता सब हमारी है।'

ऐसा करके आगे बढ़ो। सफल हो जाओ तो अभिमान के ऊपर पोता फेर दो और विफल हो जाओ तो विषाद के ऊपर पोता फेर दो। तुम अपना हृदयपटल कोरा रखो और उस पर भगवान के, गुरु के धन्यवाद के हस्ताक्षर हो जाने दो।

घोषणा से दृढ़ता

जो भी सत्कर्म करना है, जोर से संकल्प करो। भीष्म बोल देते कि 'आज से मैं यह संकल्प करता हूँ कि मैं विवाह नहीं करूँगा' तो शायद असफल हो जाते लेकिन उन्होंने दृढ़ता के साथ घोषणा कर दी : 'यह मेरी भीष्म-प्रतिज्ञा है... आकाश सुन लो, दिशाएँ सुन लो, यक्ष-गंधर्व, किन्नर सुन लो...' तो सफल हो गये।

लक्ष्मणजी लक्ष्मणरेखा खींच देते चुपचाप, नहीं। उन्होंने दृढ़ता के साथ घोषणा की : 'हे वनदेवता ! अब तुम ही रक्षा करना।' तो रावण की मजाल है कि अंदर पैर रखे ! लक्ष्मण का संकल्प उभरा है। कभी-कभी दृढ़ घोषणा करने से भी तुम्हारे संकल्प का बल वहाँ काम करता है, भाव का बल काम करता है और वातावरण तुम्हें सहयोग करता है।

प्रसूता की सँभाल

(अंक २६९ के 'नवजात शिशु का स्वागत' से आगे)

प्रसूति के तुरंत बाद प्रसूता के पेट पर रूई की मुलायम गद्दी रखकर कस के पट्टा बाँध के उसे सुला दें। इससे गर्भाशय व पेट अपनी मूल स्थिति में आते हैं और वायु का शमन होता है। थकान कम होने पर तेल से मालिश करके गरम पानी से स्नान करा दें। कान में रूई डाल के ऊपर से रूमाल (स्कार्फ) बाँध दें। प्रसूति के समय पंखा आदि नहीं होना चाहिए तथा प्रसूता को सवा माह तक पंखे, कूलर व एअर कंडीशनर तथा बाहर की खुली हवा नहीं लगने देना चाहिए।

प्रसूता सवा महीने तक पूर्ण विश्रांति ले, प्रतिदिन नियमित रूप से तेल की मालिश करवाये, एक घंटे बाद गुनगुने पानी से स्नान करे। तत्पश्चात् सेंक ले। पेट का पट्टा व कान का रूमाल भी सवा माह तक बाँधे रखना चाहिए।

प्रसव के बाद दूसरे दिन से सवा महीने तक प्रतिदिन प्रसूता को दशमूल क्वाथ अवश्य पिलाना चाहिए। इन दिनों सोंठ व मेथीदाने का नियमित सेवन शुंठीपाक, मेथीपाक आदि के रूप में करना चाहिए। इससे बल व रोगप्रतिरोधक शक्ति में वृद्धि होती है। हड्डियाँ मजबूत बनती हैं। कमरदर्द नहीं होता। दूध दोषरहित होकर खुलकर आता है।

प्रसूति के बाद ३ सप्ताह तक सुबह आधा चम्मच पीपरामूल चूर्ण ताजे मट्ठे में मिलाकर पिलाने से गर्भाशय की शुद्धि होकर पूर्वस्थिति में आने में मदद मिलती है। भोजन के बाद रोज थोड़ी-सी अजवायन खिलाने से प्रसूता की भूख खुलती है, आहार का सम्यक् पाचन होता है।

इस परिचर्या का सावधानीपूर्वक पालन करना आवश्यक है अन्यथा प्रसूति से क्षीण व दुर्बल हुई प्रसूता को कई प्रकार की कष्टदायी, दीर्घकालीन व्याधियाँ होने की सम्भावना होती है।

जननाशौच (संतान-जन्म के समय लगनेवाला अशौच-सूतक) के दौरान प्रसूतिका (माता) ४० दिन तक एवं पिता १० दिन तक माला लेकर जप न करें। (क्रमशः)

भूलकर भी चन्द्रदर्शन न करें

गणेश चतुर्थी (१७ सितम्बर २०१५) के दिन चाँद का दर्शन करने से कलंक लगता है। इस दिन चन्द्रास्त रात्रि ९-२२ बजे है। इस समय तक चन्द्रदर्शन निषिद्ध है। भूल से चन्द्रमा दिख जाने पर कलंक का प्रभाव कम करने के उपाय हेतु पढ़ें ऋषि प्रसाद, अगस्त २०१४, पृष्ठ १७।

बोगस केस का बड़ा खुलासा

पूज्य बापूजी के विरुद्ध किस प्रकार और कितना व्यापक षड्यंत्र रचा गया है, इसकी पोल अब खुलती जा रही है। किस तरह एक सुनियोजित तरीके से बापूजी के खिलाफ झूठे सबूत व गवाह खड़े किये गये, इसकी हकीकत ८ जुलाई २०१५ को जोधपुर सत्र न्यायालय में दिये गये सुधा पटेल के बयान से सामने आयी है।

पुलिस द्वारा दर्ज आरोप-पत्र में सुधा पटेल के नाम पर लिखे गये बयान में जिन अनर्गल, बेबुनियाद बातों का जिक्र किया गया था, सुधा ने उन बातों को झूठी एवं मनगढ़ंत बताया। सुधा ने पुलिस के सबसे बड़े झूठ का खुलासा करते हुए कहा कि पुलिसवालों ने दिनांक १६ सितम्बर २०१३ को मेरे बयान लिये थे, यह गलत (झूठी बात) है। आज से पहले न मैं कभी जोधपुर आयी और न कभी कहीं बयान दिये थे। जोधपुर पुलिस अहमदाबाद आयी थी। मुझसे जोधपुर पुलिस ने कोई पूछताछ नहीं की थी। पुलिस ने मुझसे हस्ताक्षर करवाये थे लेकिन मुझे पता नहीं है कि पुलिसवालों ने मेरे हस्ताक्षर किस बात के करवाये थे।

पुलिस किस प्रकार व्यक्ति से पूछताछ किये बगैर तथा बयान लिये बगैर बनावटी, बोगस बयान तैयार करके अपना दबाव बनाकर उन पर हस्ताक्षर ले के झूठे बयानों का पुलिंदा खड़ा करती है, यह सुधा के बयान से अब सबके सामने आ गया है। साजिशकर्ता पुलिस अधिकारियों से कैसे-कैसे साजिश करवा लेते हैं !

पुलिस द्वारा आरोप-पत्र में वर्णित मनगढ़ंत कहानी की पोल खोलते हुए सुधा पटेल ने न्यायालय को बताया कि मैं मेरी मर्जी से महिला आश्रम, मोटेरा (अहमदाबाद) में दस साल तक रही। मेरे साथ वहाँ कुछ गलत नहीं हुआ था। मैंने बापूजी के द्वारा किसी भी अन्य अनुयायी या महिला के साथ कोई गलत व्यवहार नहीं देखा था। यह कहना गलत है कि मैंने आश्रम में कई घटनाएँ, जो आपत्तिजनक हुई हों, उनको पुलिसवालों को बयान देते वक्त बताया हो। आश्रम में कोई भी आपत्तिजनक घटनाएँ नहीं हुई थीं, न ही मैंने पुलिसवालों को ऐसी कोई घटना बतायी है।

सुधा ने न्यायालय में दिये अपने बयान में यह भी स्पष्ट किया कि यह कहना गलत है कि मुझे और मेरे भाई को आश्रम से कोई धमकियाँ मिली हों। मुझे आश्रम द्वारा कोई लालच भी नहीं दिया गया। मैं बिना किसी भय या डर के आज यहाँ न्यायालय में बयान दे रही हूँ।

सुधा के बयान से बोगस केस का एक बड़ा खुलासा हुआ है। यह समझने की बात है कि महिला आश्रम, अहमदाबाद व छिंदवाड़ा की बेटियों को गहने व अन्य प्रलोभन देकर 'हमारे साथ भी ऐसा हुआ था' - ऐसे झूठे आरोप लगाने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया गया पर बापूजी की एक भी खानदानी बेटी धन और गहनों के प्रलोभन में नहीं आयी। सुधा ने तो इनकी पोल ही खोलकर रख दी। **(संकलक : श्री रवीश राय)**

शांति, प्रेम व एकत्व की तरंगें पैदा करती है संस्कृत भाषा

- पूज्य बापूजी

(संस्कृत दिवस : २९ अगस्त)

सुसंस्कार जिससे मिलते हैं वह है वैदिक भाषा, संस्कृत भाषा। इसको 'देवभाषा' भी कहा गया है। इसमें बड़ी विलक्षणता है। इसकी लिपि 'देवनागरी' है। अन्य भाषाओं में एकवचन और बहुवचन - ये दो वचन होते हैं परंतु इसमें तीन वचन हैं। अन्य अधिकांश भाषाओं में तीन लिंग नहीं हैं, इस भाषा में तीन लिंग हैं। संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीन धरोहर है। ऐसी धरोहर जो प्राचीन होते हुए भी नित्य-नूतन बनी रही। भारत की समस्त भाषाएँ संस्कृत से जीवन-रस प्राप्त करती हैं। धार्मिक जीवन, सुसंस्कृत जीवन, विकारों की विकृति से बचकर समाधिस्थ और प्रकृतिस्थ जीवन तथा इन सबसे ऊपर उठाकर प्रारब्ध से भी आगे पहुँचा के जीवात्मा को परमात्मा से मिलाने की व्यवस्था करती है संस्कृत भाषा व अपनी संस्कृति।

विकृति है इसलिए संस्कृति चाहिए। जैसे हम स्नान करते हैं तो स्नानरूपी संस्कार से शरीर शुद्ध होता है। कहीं बाल कम हैं तो नकली बाल अथवा रूप-रंग में कमी है तो नकली रूप-रंग लगाकर हीनांगपूर्ति कर देते हैं, ऐसे ही जो विकृति है वह हटायी जाती है और जहाँ कमी है वहाँ पूर्ति की जाती है, इसीका नाम है संस्कृति। तो अपने जीवन में पूर्ण सुख, पूर्ण ज्ञान और पूर्णता की अनुभूति करा दे, इस व्यवस्था को बोलते हैं सत्संग और संस्कृति का मार्गदर्शन।

सत्संग के बिना मनुष्य चाहे कितने भी बड़े पद पर पहुँच गया हो लेकिन हृदय की अशांति और अतृप्ति नहीं जायेगी। खपे, खपे... (और चाहिए... और चाहिए...) बना रहेगा। तो संस्कृत, संस्कार और सत्संग से व्यक्ति अपने-आपमें तृप्त रहने लगता है।

संस्कृत भाषा सब भाषाओं की माता है। संस्कृत का जो अर्थ जानता है उसको उसका आनंद मिलता

है । आप संस्कृत उच्चारण करो तो थोड़ी देर में वातावरण में शांति, प्रेम और एकत्व की तरंगें पैदा हो जायेंगी । बड़े-बड़े आचार्यों ने, बड़े-बड़े विदेशी विद्वानों ने भी कहा है कि जब अंग्रेजी बोलते हैं तो मन बहिर्मुख होता है और संस्कृत बोलते हैं तो बहिर्मुख मन अंतर्मुख होता है क्योंकि संस्कृत अंदर से निकली है । शब्दों का अपना प्रभाव है ।

शब्दों में गजब की शक्ति है ! गांधीजी ने कहा : ''अंग्रेजो ! भारत छोड़ो ।'' दो ही शब्द थे । लोगों ने कहा, 'यह कैसा पागल आदमी है !' लेकिन वे दृढ़ रहे तो फिर ५-२५ से बढ़ते-बढ़ते हजारों-लाखों-करोड़ों लोगों के संकल्प हुए और अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा । द्रौपदी ने कहा : ''अंधे की औलाद अंधी ।'' ये कुछ ही शब्द थे, महाभारत का युद्ध हो गया । ५ साल के ध्रुव को सौतेली माँ ने कहा : ''बाप की गोद में बैठना है तो तपस्या करके मरो और मेरी कोख से जन्म लो तब बाप की गोद में बैठने को मिलेगा ।'' ये दो वचन लग गये और ध्रुव लग गया, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।' जप करने में और साढ़े ५ महीने के अंदर उसको भगवत्प्राप्ति हो गयी । मंत्र भी तो शब्द हैं ।

बच्चे भी अगर शब्दों की ताकत को समझते हैं तो शिक्षकों को भी नचा देते हैं । एक शिक्षक विद्यालय में गया । बच्चों ने सोचा कि 'आज कुछ भी करके मास्टर साहब को घर रवाना करना है ।' एक लड़के ने कहा : ''महाशय ! आपकी आँखें थोड़ी लाल हैं, आपको कुछ हो गया है ।''

मास्टर ने बोला : ''नहीं ।''

दूसरे बच्चे ने हाथ पकड़ा, बोला : ''आपको तो बुखार है ।''

तीसरा : ''आपको बुखार है आपको पता नहीं !''

चौथा हँसता हुआ कहता है : ''आपके चेहरे पर कमजोरी भी है, थकान भी है !''

पाँचवें ने कहा : ''आप जबरन पढ़ायेंगे तो आपको न्यूमोनिया हो सकता है । परीक्षा के दिन नजदीक हैं, आप जैसे अच्छे शिक्षक को न्यूमोनिया हो जाय तो हम कहाँ पढ़ेंगे मास्टर साहब ! आज आप आराम करिये ।''

थोड़ी देर में शिक्षक को बुखार ने पकड़ लिया, कमजोरी उभर आयी और साहब घर जा के रजाई डालकर सो गये । जब झूठ-मूठ के शब्द ऐसा हाल कर सकते हैं तो वैदिक मंत्र तो महाराज ! सत्य हैं और संस्कृत तो मूल भाषा है । सारी भाषाओं का सार संस्कृत है । जो संस्कृत जानते हैं उनको संस्कृत का अपना आनंद आता है ।

आत्मा की अनुभूति करानेवाली जो भाषा है, वह संस्कृत है । जो शास्त्र बने हैं वे संस्कृत में हैं । चीन की दीवाल मशहूर है, कुवैत का पेट्रोलियम मशहूर है और भारत के संत मशहूर हैं और संतों के संतत्व का मूल है संस्कृत भाषा का सत्साहित्य, वैदिक ज्ञान ।

विश्व में फैली अशांति को दूर करने का उपाय

- पूज्य बापूजी

दूरदर्शन पर पूर्व में प्रसारित पूज्य बापूजी का विश्वशांति संदेश

(अंक २६८ से आगे)

प्रश्न : स्वामीजी ! आज विश्व में हर कोई आगे भागना चाहता है। रास्ता सही है या गलत - इससे उसको कोई मतलब नहीं। दूसरे को धक्का दे के सिर्फ दौड़ में आगे पहुँचना है। इससे विश्व में जो अशांति फैल रही है, उसे दूर करने का क्या कोई रास्ता है ?

पूज्य बापूजी : हाँ, रास्ता है। दूसरे को धक्का दे के आगे बढ़ने की अपेक्षा दूसरे को आगे बढ़ाते हुए आगे बढ़ने का रास्ता है। किसीकी टाँग खींचकर आगे बढ़ने, ऊपर उठने के बजाय साथ में आगे बढ़ने से शांति का संबंध है। **Every action creates a reaction.** हम जो भी करते हैं, वह घूम-फिर के हमारे पास आता है। हम भले विचार करेंगे, भलाई करेंगे तो हमारे चित्त में भले भाव पैदा होंगे। सामनेवाले का अहित सोचेंगे तो उसका अहित हो चाहे न हो लेकिन अहित के विचार से हमारे चित्त में अशांति और धड़कनें बढ़ जाती हैं।

विश्व में अशांति क्यों है ? क्योंकि शांति का जो मूल है, उसको विश्व भूल गया है और इन्द्रियों को तृप्त करने के पीछे पड़ा है। मनुष्य जितना विषय-विकारों के पीछे तेजी से भागेगा, उतना ही मन की चंचलता बढ़ेगी, उतना ही झूठ-कपट, धोखाधड़ी करके सुखी रहने की कोशिश करेगा। हकीकत में दूसरे का शोषण या दूसरे को दुःखी करके जो सुखी होने की कोशिश करता है, वह प्राचीनकाल से आसुरी स्वभाववालों की सूची में गिना जाता है। **आसुरं भावमाश्रिताः। (गीता : ७.१५)** जो आसुर भाव का आश्रय लेते हैं, वे भले बाहर से थोड़े सुखी और सफल दिख जायें थोड़े दिन के लिए लेकिन उन्हें चित्त की शांति, माधुर्य नहीं मिलता।

बोले, 'चित्त की शांति से क्या लाभ होगा ?' चित्त की शांति से 'परमात्म-प्रसाद, आत्मसुख' की प्राप्ति होगी। परमात्म-प्रसाद मतलब बुद्धि को जो संतोष मिलेगा, मन को जो तृप्ति मिलेगी उससे आप जिस किसी व्यवहार में हैं, जिस किसी प्रवृत्ति में हैं सही निर्णय आयेंगे। बहुत सारे रोग, बहुत सारे गलत निर्णय, दुर्घटनाएँ तथा बहुत सारे झगड़े अशांति के कारण होते हैं। सारे दुःखों का मूल अगर खोजा जाय तो अशांति है और सारे सुखों का मूल परमात्म-शांति है।

अशान्तस्य कुतः सुखम्। 'अशांत को सुख कहाँ ?' शान्तस्य कुतः दुःखम्। 'शांत को दुःख कहाँ ?'

प्रश्न : मन शांत रखना चाहिए - यह कहना आसान है लेकिन जब सामान्य व्यक्ति अपने मन को शांत रखना चाहता है तो वह नहीं रख पाता है, फिर क्या करे ?

पूज्य बापूजी : सिर्फ कहना आसान नहीं है, करना भी आसान है। जिन (महापुरुषों) को आसान लगता है उनका सान्निध्य-सत्संग जरा कठिन है, बाकी यह कठिन नहीं है। मन में क्रोध आया और मन अशांत हो गया, क्रोध चला गया तो मन स्वाभाविक शांत हो जाता है। दरिया या नदी में आँधी-तूफान आया या हवाएँ चलीं तो लहरें उठीं, हवाएँ शांत तो लहरें शांत। मन में ग्लानि, घृणा आयी तो मन अशांत, घृणा चली गयी तो मन शांत। मन में द्वेष आया तो मन अशांत, द्वेष चला गया तो शांत। अब 'कहना आसान है, करना कठिन है' - ऐसा समझ के इसको कठिन न बनायें। व्यक्ति चाहे कितना भी पापी, दुर्गुणी, कैसा भी हो, सुबह जब उठता है तो पहले सेकंड वह शांत होता है। अब पहले सेकंड जो शांत होता है वह दूसरे सेकंड को शांतिमय बनाता जाय, तीसरे को बनाता जाय... एक मिनट सुबह का शांतिमय बना ले। जब एक मिनट की शांति में वह सफल हो जायेगा तो दो मिनट भी शांति का रस बढ़ सकता है, ऐसे ही व्यवहार के हर घंटे में एकाध मिनट शांत होने का अभ्यास करे। पहले तो भाई ! जैसे पहली कक्षा में पढ़ते थे और १, २, ३ या क, ख, ग, घ लिखते थे तो वह बड़ा कठिन लगता था। बड़ा कठिन समझकर विद्यालय से भाग आते तो आज आप लोग पढ़ नहीं सकते थे। 'शांति पाना कठिन है' - ऐसा समझकर पलायनवादी विचार नहीं करना चाहिए।

वो कौन-सा उकदा है जो हो नहीं सकता ?

शांति तो दिलबर (परमात्मा) का स्वभाव है और उस दिलबर की सत्ता से तो सारे संकल्प उठते हैं। आपने, हमने और किसीने कभी भी सड़क पर तरंग को भागते नहीं देखा। जब तरंग को भागते देखा होगा तो पानी पर ही भागती है, ऐसे ही हमारे जो संकल्प-विकल्प हैं वे शांतस्वरूप चैतन्य से ही उठते हैं। जब संकल्प-विकल्पों में दूसरे का खयाल किये बिना अपनी आसक्ति को तृप्त करने की बेवकूफी होती है तो अशांति बढ़ जाती है। (क्रमशः)

******

(पृष्ठ २३ का शेष) अच्छा और बुरा सपना है, जिससे दिखता है वह परमात्मा अपना है, इस प्रकाश में जियो। सच्चे गुरु का चेला... सत्य को जानकर सत्यस्वरूप हो जा ! अमृतत्व को प्राप्त कर !!

न विकारों में फँसो, न एकदेशीय बनो। कभी कीर्तन, कभी जप, कभी ध्यान, कभी सुमिरन तो कभी ज्ञान का आश्रय लो और कभी सब छोड़कर शांत बैठो। शीघ्र तुम्हारे हृदय में प्रेम, शांति पैदा होगी, सद्बुद्धि आयेगी।

ऐसी उपासना करो कि विश्वेश्वर की प्रदक्षिणा हो। परमात्मा के स्वरूप को जानो, गुरु के ज्ञान को झेलो, गुरु से बेवफाई मत करो। गुरु से धोखा मत करो। गुरु के प्रकाश में जियो।

ज्योत से ज्योत जगाओ... ! गुरुजी के हृदय में ज्ञान की ज्योत है, उसी ज्योत से हमारी ज्योत जगे। मेरा अंतर तिमिर मिटाओ... अंतर में युग युग से सोई, चितिशक्ति को जगाओ... साची ज्योत जगे जो हृदय में, 'सोऽहम्' नाद जगाओ... 'जो सब परिस्थितियों को जान रहा है, वह मेरा आत्मा है' - ऐसा 'सोऽहम्' अनुभव जगाओ सद्गुरु ! ज्योत से ज्योत जगाओ।

गुरु के प्रकाश में जियो - पूज्य बापूजी

सद्गुरु के सच्चे शिष्य तो मौत को भी भगवान की लीला समझते हैं। 'मौत आती है तो पुराने कपड़े लेकर नये देती है। अमृतत्व और मृत्यु सबमें भगवान की सत्ता ज्यों-की-त्यों है। हररोज नींद में मृत्यु जैसी दशा हो जाती है तो पुष्ट हो जाते हैं, ऐसे ही मृत्यु के बाद नया शरीर मिलता है। और मृत्यु जिसकी होती है वह शरीर है, मेरी मृत्यु नहीं होती है। ॐ ॐ ॐ...' - ऐसा करके अपने अमर आत्मा को पा लेते हैं सच्चे गुरु के सच्चे शिष्य ! सच्चिदानंद ब्रह्म का ज्ञान देनेवाले गुरु के दिये हुए नजरिये से जो उपासना करते हैं, वे मुक्तात्मा हो जाते हैं, शोक, मोह, दुःख और दीनता से रहित हो जाते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण कृपा करके गीता में ९वें अध्याय के १६वें से १९वें श्लोक तक ऊँची साधना, ऊँची उपासना की बात कहते हैं :

अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम्।...

यज्ञ में मेरी शक्ति है, अग्नि में भी मेरी चेतना है। मंत्र व आहुति में भी मुझ चैतन्य ही को देखो और आहुति के बाद शांत होकर मुझीमें आओ। इससे तुम मुझे ही प्राप्त हो जाओगे।

घन सुषुप्ति, क्षीण सुषुप्ति, स्वप्नावस्था और शुद्ध ब्रह्म - सब एक ही परमात्मा के हैं। जैसे रात्रि को स्वप्न में जड़ चीजें, वृक्ष, जीव-जंतु और संत-महात्मा सभी उसी स्वप्नद्रष्टा के - ऐसे ही सब सच्चिदानंद परमात्मा वासुदेव की लीला, ऐसी उपासना करनेवाले भगवान को प्रीतिपूर्वक भजते हैं। वे कीर्तन, सुमिरन, प्रणाम, भोजन, समाधि - सब कुछ करते हुए, सब कुछ जिसमें हो रहा है उसीकी स्मृति और प्रीति में मस्त रहते हैं। यह बहुत ऊँची साधना है, ऊँचा नजरिया है। किसीके लिए राग-द्वेष, नफरत रखना - यह अंधकूप में जाना है।

इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए तो कई राजा राजपाट छोड़कर १२-१२ साल गुरुओं के द्वार पर झाड़ू-बुहारी करते थे, तभी ऐसा तत्त्वज्ञान मिलता था। राजा भर्तृहरि को मिला और अमृतत्व की प्राप्ति हो गयी। वे लिखते हैं :

जब स्वचछ सत्संग कीन्हों, तभी कछु कछु चीन्ह्यो।

जब शुद्ध सत्संग मिला, समर्थ गुरु का ज्ञान मिला तभी कुछ-कुछ जाना। क्या जाना ? बोले, मूढ़ जान्यो आपको। मैं बेवकूफ था, घर में पूजा-पाठ करता था, शास्त्र पढ़ता था लेकिन कभी कहीं रुका, कभी कहीं रुका। सब हो-हो के बदल जाते हैं परंतु उस अबदल परमात्मा में जगानेवाले सद्गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

रब मेरा सतगुरु बण के आया...
मत्था टेक लैण दे।...

सच्चा ज्ञान देनेवाले सद्गुरु होते हैं। नहीं तो कोई कहीं फँसता है, कोई कहीं फँसता है। खाने-पीने को है, पत्नी, बेटा, गाड़ी बहुत बढ़िया है, बड़ा मस्त हूँ... आसक्ति करके अंधकूप में मत गिरो। आयुष्य नाश हो रहा है, मौत आ जायेगी। पत्नी बेकार है, पति ऐसा है, बेटा ऐसा है... परेशान होकर अंधकूप में मत गिरो। न सुंदर में फँसो, न कुरूप से ऊबो। न अच्छे में फँसो, न बुरे में फँसो।

(शेष पृष्ठ २२ पर)

देशभर में अनेक स्थानों पर हो रहे सारस्वत्य मंत्र-अनुष्ठान शिविरों की शृंखला में २१ जून से २७ जून तक रजोकरी आश्रम, दिल्ली में विद्यार्थी शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में उपस्थित बच्चों की पुकार पूज्य बापूजी तक पहुँची और बापूजी ने बच्चों के लिए प्रसाद व संदेशा भिजवाया :

सद्गुरुदेव की पाती, सौभाग्यशाली शिविरार्थी बच्चों के लिए...

॥ हरि ॐ ॐ ॐ ॥

दिनांक : २७ जून २०१५

बच्चों को संदेश में सुनाता हूँ :

जन्म से ७ साल तक मूलाधार केन्द्र, जो शरीर की नींव है, वह विकसित होता है। ७ से १४ साल की उम्र तक स्वाधिष्ठान केन्द्र, १४ से २१ तक मणिपुर केन्द्र - बुद्धि को विकसित करने के लिए स्वर्ण समय है। यह समय भावनाओं को दिव्य व सफल बनाने के लिए सटीक समय है। मैं तो बच्चों को शाबाशी, धन्यवाद देता हूँ लेकिन उनके माँ-बाप को कौन-से शब्दों में शाबाशी दूँ! शिवजी ने कहा है : 'उनकी माता धन्य है, उनके पिता धन्य हैं, उनका कुल-गोत्र धन्य है, जिनके हृदय में गुरुभक्ति, गुरुज्ञान है।'

मुझे बचपन में साधना का चस्का लगानेवाली माँ मिली। अगर पिक्चर दिखानेवाली या टी.वी.

दिखानेवाली माँ मिलती तो मेरी क्या दुर्गति होती ! यहाँ (जोधपुर जेल) के कुछ कैदियों की दुर्दशा, व्यसनलिप्तता का यही कारण है कि बाल्यकाल में उन्हें ऊँची भावना और ऊँची समझ नहीं मिली । शिविर में आनेवाले सभी बच्चों को फिर-फिर से मैं स्नेहपूर्वक शाबाशी देता हूँ । शैशव-अवस्था भी कुछ नहीं, वृद्धावस्था भी कुछ नहीं, बीच की अवस्था धन्य है ! अगली भी कुछ नहीं, पिछली भी कुछ नहीं, बलिहारी बिचली की । ऐसे शिविरार्थी बच्चों की बिचली उम्र की बलिहारी है ।

घर जाओगे तो १ से ७ दिन तक जो साधन किया है, उसको बढ़ाते रहना । गंदे चलचित्र और गंदे व्यसनों व कर्मों में फँसे हुए सहपाठियों एवं लोगों से बचना । थोड़े दिनों में आ रहा हूँ, तुम्हारी खबर लूँगा ! खुश-खुश हो गये न ! ॐ ॐ ॐ ॐ... ॐ गुरु... वाह साँईं वाह !

तुम्हारा माहौल मधुमय हो जायेगा । जिनको सुधरना होता है वे यहाँ पर आते हैं, दीक्षा लेते हैं और उनके व्यसन छूट जाते हैं । कई लोग दीक्षा का, व्यसन छोड़ने का फायदा एक-दूसरे को सुनाते हैं और बोलते हैं : ''बापूजी पहले मिले होते तो...'' अब तुमको तो पहले ही मिला हूँ, वे तो बेचारे पछताते हैं । पिक्चर और व्यसन के बदले 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक और 'ध्यान योग शिविर' देश के सभी बच्चों को मिले तो आऽहाऽऽ... ! मनमोहन सरकार को मैंने दर्जनों बार मंच से कहा था : 'कुछ समय सँभालो,

इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें

२६ अगस्त : पुत्रदा-पवित्रा एकादशी (व्रत से मनोवांछित फल प्राप्त होता है ।)
२९ अगस्त : श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबंधन
१ सितम्बर : मंगलवारी चतुर्थी (दोपहर १-२४ से २ सितम्बर सूर्योदय तक)
५ सितम्बर : जन्माष्टमी, उपवास (निशीथकाल : रात्रि १२-१४ से १-०१ तक)
८ सितम्बर : अजा एकादशी (यह व्रत सब पापों का नाश करनेवाला है । इसका माहात्म्य पढ़ने और सुनने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है ।)
१७ सितम्बर : विनायक-कलंक-गणेश चतुर्थी, चन्द्रदर्शन निषिद्ध (रात्रि ९-२२ तक), षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : दोपहर १२-२१ से सूर्यास्त तक); गणेश चतुर्थी के दिन 'ॐ गं गणपतये नमः' का जप करने और गुड़मिश्रित जल से गणेशजी को स्नान कराने एवं दूर्वा व सिंदूर की आहुति देने से विघ्न-निवारण होता है तथा मेधाशक्ति बढ़ती है ।
२० सितम्बर : रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से रात्रि २-२४ तक)

राष्ट्रभाषा का महत्त्व

भाषा अनुभूति को अभिव्यक्त करने का माध्यम भर नहीं है बल्कि यह सभ्यता को संस्कारित करनेवाली वीणा एवं संस्कृति को शब्द देनेवाली वाणी है । किसी भी देश का प्राणतत्त्व उसकी संस्कृति होती है । संस्कृति की अभिव्यक्ति भाषा के द्वारा होती है । जो श्रद्धाभाव 'भारत माता' में है, वह 'मदर इंडिया' में तो हो ही नहीं सकता । 'माताश्री' कहने में जो स्नेहभाव है, वह 'मम्मी' में कहाँ ? भाषा राष्ट्र की एकता, अखंडता तथा विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है । यदि राष्ट्र को सशक्त बनाना है तो एक राष्ट्रभाषा होनी चाहिए ।

संविधान सभा में १२ से १४ सितम्बर १९४९ तक हुई बहस में हिन्दी को राजभाषा और अंग्रेजी को १५ वर्ष तक अतिरिक्त भाषा बनाये रखने का प्रस्ताव मान्य हुआ । किंतु इस देश की भाषा-राजनीति जिस प्रकार की करवटें लेती रही है, उससे अतिरिक्त रूप से मान्य की गयी अंग्रेजी आज भी मुख्य राजभाषा बनी हुई है और हिन्दी भाषा अंग्रेजी के इस 'अतिरिक्तत्व' का बोझा ढो रही है ।

अंग्रेजी शिक्षा देना माने गुलामी में डालना

महात्मा गांधी विदेशी भाषा के दुष्परिणामों को भलीभाँति जानते थे । वे कहते हैं : ''विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पाने में जो बोझ दिमाग पर पड़ता है वह असह्य है । इससे हमारे स्नातक (ग्रेजुएट) अधिकतर निकम्मे, कमजोर, निरुत्साही, रोगी और कोरे नकलची बन जाते हैं । उनमें खोज की शक्ति, विचार करने की ताकत, साहस, धीरज, बहादुरी, निडरता आदि गुण बहुत ही क्षीण हो जाते हैं । करोड़ों लोगों को अंग्रेजी की शिक्षा देना उन्हें गुलामी में डालने जैसा है । यह क्या कम जुल्म की बात है कि अपने देश में अगर मुझे न्याय पाना हो तो मुझे अंग्रेजी का उपयोग करना पड़े ! बैरिस्टर होने पर मैं स्वभाषा बोल ही नहीं सकूँ ! यह गुलामी की हद नहीं तो और क्या है ?

राष्ट्रभाषा हिन्दी ही क्यों ?

जरा गहरे जाकर देखेंगे तो पता चलेगा कि अंग्रेजी राष्ट्रीय भाषा न तो हो सकती है और न होनी चाहिए । तब राष्ट्रीय भाषा के क्या लक्षण होने चाहिए ?

(१) वह भाषा सरकारी नौकरीवालों तथा समस्त राष्ट्र के लिए आसान हो ।

(२) उसके द्वारा भारत का धार्मिक, आर्थिक व राजनीतिक कामकाज हो सकना चाहिए ।

(३) उसे देश के ज्यादातर लोग बोलते हों ।

(४) उस भाषा का विचार करते समय क्षणिक

स्थिति पर जोर न दिया जाय।

अंग्रेजी में इनमें से एक भी लक्षण नहीं है। अतः राष्ट्र की भाषा अंग्रेजी नहीं हो सकती। हिन्दी में ये सारे लक्षण मौजूद हैं। हिन्दी के धर्मोपदेशक और उर्दू के मौलवी सारे भारत में अपने वक्तव्य हिन्दी में ही देते हैं और अनपढ़ जनता उन्हें समझ लेती है। इस तरह हिन्दी भाषा पहले से ही राष्ट्रभाषा बन चुकी है। अतः हिन्दी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है।

बंगाली, सिंधी और गुजराती लोगों के लिए तो वह बड़ा आसान है। कुछ महीनों में वे हिन्दी पर अच्छा काबू करके राष्ट्रीय कामकाज उसमें चला सकते हैं। तमिल आदि द्राविड़ी हिस्सों की अपनी भाषाएँ हैं और उनकी बनावट व व्याकरण संस्कृत से अलग है। परंतु यह कठिनाई सिर्फ आज के पढ़े-लिखे लोगों के लिए ही है। उनके स्वदेशाभिमान पर भरोसा करने और विशेष प्रयत्न करके हिन्दी सीख लेने की आशा रखने का हमें अधिकार है। यदि हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पद मिले तो मद्रास तथा दूसरे प्रांतों के बीच विशेष परिचय होने की सम्भावना बढ़ेगी।

हिन्दी को हम राष्ट्रभाषा मानते हैं। वही भाषा राष्ट्रीय बन सकती है, जिसे अधिक संख्या में लोग जानते-बोलते हों और जो सीखने में सुगम हो। (वर्तमान में हिन्दी भाषियों की संख्या ६० करोड़ से भी अधिक है।) अगर हिन्दुस्तान को हमें एक राष्ट्र बनाना है तो चाहे कोई माने या न माने, राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही बन सकती है क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है, वह किसी दूसरी भाषा को कभी नहीं मिल सकता।''

('मेरे सपनों का भारत', पृष्ठ १८०-२२३ से संक्षिप्त)

संतों-महापुरुषों का योगदान

हिन्दी भाषा के विकास में संतों-महात्माओं का योगदान भी बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा है। उत्तर भारत के संत सूरदासजी, संत तुलसीदासजी तथा मीराबाई, दक्षिण भारत के प्रमुख संत वल्लभाचार्यजी, रामानंदाचार्यजी, महाराष्ट्र के संत नामदेवजी, गुजरात के ऋषि दयानंद सरस्वती, राजस्थान के संत दादू दयालजी तथा पंजाब के गुरु नानकजी आदि संतों ने अपने धर्म तथा संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए हिन्दी को ही सशक्त माध्यम बनाया।

पिछले ५० सालों से पूज्य बापूजी हिन्दी में सत्संग करते आये हैं और हिन्दी की महत्ता व उपयोगिता पर प्रकाश डालकर लोगों को प्रेरित करते हुए हिन्दी भाषा के प्रयोग पर जोर देते आये हैं। पूज्य बापूजी कहते हैं : ''जापानी अमेरिका में भी अपने देश की भाषा बोलते हैं और हम अपने देश में भी पाश्चात्य भाषा घुसेड़-घुसेड़ के अपनी संस्कृति का गला घोट रहे हैं। गुलामी की जंजीरों को तोड़ो! स्वयं भी मातृभाषा का ही प्रयोग करो और दूसरों को भी प्रेरित करो।''

समाधान

सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि हम स्वयं अपने कार्यों में हिन्दी का कितना प्रयोग करते हैं ? क्या हम हस्ताक्षर, घर के बाहर के नामपट्ट, हिसाब-किताब, डाकघर, बैंकों आदि के पत्रक - इन सबमें हिन्दी का प्रयोग करते हैं ?

लोग अपने वाहनों पर देवी-देवताओं के आदरसूचक वाक्य भी (जैसे - जय मातादी, ॐ नमः शिवाय, हरि ॐ आदि) अंग्रेजी में लिखवाकर गर्व का अनुभव करते हैं।

अब इस गुलामी की जंजीर को उखाड़ना होगा। हिन्दी की महत्ता को समझना तथा दूसरों को समझाना होगा। प्रत्येक राष्ट्रभक्त व्यक्ति और संस्था का कर्तव्य है कि वह संविधान-प्रदत्त राजभाषा हिन्दी के अधिकार को ध्यान में रखे और अपने दैनिक जीवन में आग्रहपूर्वक हिन्दी का प्रयोग करे। इसकी शुरुआत आप अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करते हुए कर सकते हैं।

चार प्रकार के मानव

- पूज्य बापूजी

अनादिकाल से यह संसार चलता आ रहा है और चलता रहेगा । इस संसार में करोड़ों व्यक्ति पैदा होते हैं और चले जाते हैं । इन सबमें मुख्य रूप से ४ प्रकार के लोग होते हैं :

एक होते हैं प्रवाही :
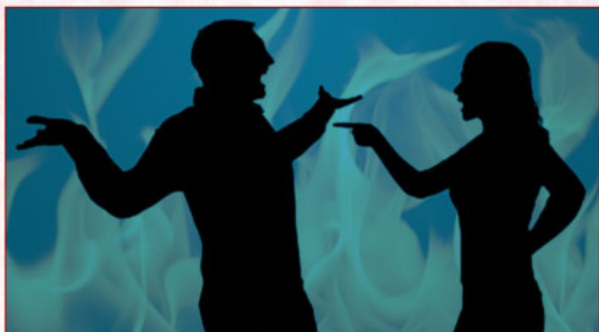
जैसे नदी का प्रवाह बह रहा हो और उसमें तिनका गिरे तो वह प्रवाह के साथ बह जाता है, ऐसे ही जो चित्त के विकारों के बहाव में बह जाता है । काम आये तो काम में बह जाय, क्रोध आये तो क्रोध में बह जाय और लोभ आये तो लोभ में बहकर लोभी बन जाय, ऐसे लोगों को प्रवाही बोलते हैं।

दूसरे होते हैं कर्मी : वे प्रवाह में बहते तो हैं पर थोड़ा विचार भी करते हैं कि 'आखिर क्या ? काम, क्रोध, लोभ, मोह में कब तक बहते रहना ?' वे थोड़ा व्रत-नियम ले लेते हैं, कुछ सत्कर्म कर लेते हैं और अपने को बहने से रोक लेते हैं । रुकने का मौका मिला तो रुक गये पर प्रवाह का धक्का लगा तो किनारा छूट जाता है । जैसे, कोई पेड़ के तने के सहारे रहकर अपने को बचाते हुए किनारे लग जाता है, वैसे ही वे धर्म-कर्मरूपी तने के सहारे किनारे लगते हैं किंतु जोरों का धक्का लगने पर पुनः बहने लगते हैं । इनमें जिन साधकों और भक्तों का समावेश होता है उन्हें कर्मी कहते हैं ।

तीसरे होते हैं जिज्ञासु :

कुछ विशेष दृढ़तावाले होते हैं जो दृढ़ विवेक-वैराग्य का सहारा लेकर उस प्रवाह से बच निकलते हैं और किनारे लगे रहने की कोशिश करते हैं, वे जिज्ञासु हैं । फिर प्रवाही लोग उनको खींचते हैं कि 'हम बहे जा रहे हैं और आप क्यों किनारे लटके हो ? देखो, हम कैसे मजे से बह रहे हैं ! मजा आयेगा... आप भी आ जाओ... चलो, वैसे तो हम भी किनारे आना चाहते हैं । जब आयेंगे तब आयेंगे लेकिन अभी तो आप आ जाओ ।'
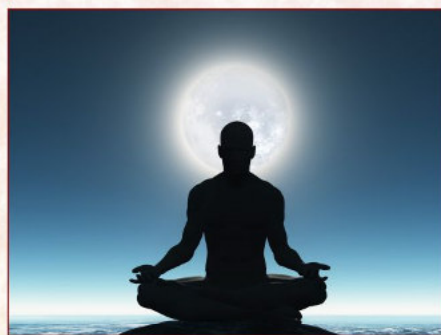
अक्षर जिज्ञासु उनके चक्कर में आ जाता है तो वह कर्मियों की पंक्ति में आ जाता है और सावधान नहीं रहा तो प्रवाही भी हो सकता है । अगर वह अडिग रहता है तो वही जिज्ञासु मुमुक्षु बनकर फिर मुक्त हो जाता है, ब्रह्मज्ञानी हो जाता है।

ब्रह्मज्ञानी है चौथा प्रकार । ऐसे ज्ञानी महापुरुष पहले तीन प्रकार के लोगों - प्रवाही, कर्मी, जिज्ञासु को जानते हैं और सबको अपने-अपने ढंग से किनारे लगाने में लगे रहते हैं । यदि सब मिलकर उनसे कहें कि 'आप भी हमारे साथ चलो' तो वे सबकी बात टालेंगे नहीं वरन् कहेंगे कि 'हाँ हाँ, आयेंगे लेकिन पहले तुम किनारे लग जाओ, फिर हम देखेंगे कि आना है कि नहीं आना है ।' उन्हें बोलते हैं आत्मज्ञानी महापुरुष । ऐसे ज्ञानी तो कभी-कभी, कहीं-कहीं मिलते हैं । श्रीमद्भगवद्गीता में भी आता है :

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ।।

'बहुत जन्मों के अंत के जन्म में तत्त्वज्ञान को प्राप्त पुरुष, सब कुछ वासुदेव ही है - इस प्रकार मुझको भजता है, वह महात्मा अत्यंत दुर्लभ है ।' (गीता : ७.१९)

वे महापुरुष एकांत में अपने ब्रह्मानंद की मस्ती छोड़कर आपके बीच आते हैं, आपके हजार-हजार प्रश्न सुनते हैं, जवाब देते हैं । प्रसाद लेते-देते हैं । क्यों ? इसीलिए कि शायद आप उस बहते प्रवाह की धारा में से थोड़ा किनारे लग जाओ । नहीं तो उन्हें ऐसी मजदूरी करने की क्या जरूरत ? ऐसे संत-महापुरुष दिन-रात दूसरों के कल्याण हेतु परिश्रम करते रहते हैं फिर भी उनके लिए तो यह सब सहज स्वाभाविक एवं विनोदमात्र होता है ।

विनोद मात्र व्यवहार जेनो ब्रह्मनिष्ठ प्रमाण ।

'मेरे गुरुदेव ने अगर ऐसा नहीं किया होता तो शायद मेरी जिज्ञासा पूरी नहीं होती' ऐसा समझकर ही अब ब्रह्मवेत्ता लोग आपके लिए यह सब कर रहे हैं । अतः आप कृपा करके मेरे गुरुदेव का दिखाया हुआ ज्ञानरूपी तना पकड़कर संसार-प्रवाह से बचकर किनारे लग जाना । नियम-निष्ठारूपी आधार लेकर अपने उद्देश्य को याद करके किनारे की ओर आगे बढ़ते रहना । आपका उद्देश्य आत्मा-परमात्मा में विश्रांति पाना है, न कि संसार के प्रवाह में बहना, बार-बार जन्मना और मरना । इस बात की स्मृति बनाये रखना । आप जिस देश में रहो, जिस वेश में रहो, हमें उससे कोई हर्ज नहीं है लेकिन जहाँ भी रहो, अपने आत्मा-परमात्मा में रहना, अपने सत्यस्वरूप की स्मृति बनाये रखना ।

परमात्मा के नाते आपका और हमारा संबंध है । वह परमात्मा ही सबका आधार है । परमात्मा को जान लेना ही सर्व का सार है । जितना चलना चाहिए उतना चलना होगा, जितना चल सकते हो उतना नहीं । प्रभु के आशिक नींद में ग्रस्त नहीं होते, व्याकुल हृदय से तड़पते हुए प्रतीक्षा करते हैं । वे सदा जाग्रत रहते हैं, सदा सजग रहते हैं, विकारों में फिसलने से बचने हेतु जगते रहते हैं ।

अमृतबिंदु

भगवान ने जो बुद्धि दी है उसका उपयोग बंधन काटने में करें, हृदय को शुद्ध करने में करें । यह तभी हो सकता है जब सत्संग से बुद्धि सुसंस्कारी होगी । सदा यही प्रयत्न करो कि जीवन में से सत्संग न छूटे, सद्गुरु का सान्निध्य न छूटे । सद्गुरु से बिछुड़ा हुआ साधक न जीवन के योग्य रहता है, न मौत के । - पूज्य बापूजी

चढ़ा वैराग्य का रंग

१८वीं विक्रमी शताब्दी की बात है। लालनाथ नाम के एक सज्जन गौना कराके अपने घर जा रहे थे। रास्ते में एक गाँव पड़ा लिखमादेसर। वहाँ महात्मा कुम्भनाथजी रहते थे। लालनाथ उनके दर्शन करने पहुँचे। महात्मा उस समय भक्तों को तरबूज का प्रसाद बाँट रहे थे, बोले : ''और है कोई लेनहार ?'' लालनाथ ने बड़े आदर से आगे बढ़कर प्रसाद ले लिया। संतों की दृष्टि व स्पर्श के द्वारा उनके दिव्य परमाणु वातावरण में फैलते रहते हैं। उनके मुख से निकली वाणी कल्याणकारी होती है।

एक होते हैं कृत उपासक, जो पूर्व में उपासना करके अपने अंतःकरण का निर्माण कर चुके होते हैं। उन्हें गुरुकृपा बहुत ही जल्दी असर कर जाती है। दूसरे होते हैं अकृत उपासक, जो सत्संग, गुरु-प्रसाद प्राप्त करते-करते समय पाकर उस ऊँचाई को प्राप्त करते हैं।

लालनाथ की पूर्वजन्म की पुण्याई कहें या संत की अहैतुकी कृपा, कुम्भनाथजी के हाथ का प्रसाद खाते ही उन पर वैराग्य का गहरा रंग चढ़ गया। महात्मा के दर्शन तथा सान्निध्य से उनका विवेक जाग उठा, अंदर सोया वैराग्य का अंकुर फूट पड़ा। साथियों ने ताना मारते हुए कहा : ''यही करना था तो फिर विवाह ही क्यों किया ?''

लालनाथ बोले : ''बेहड़ा लिखिया ना टलै दीया अंट बुलाय। विधाता ने जो लिख दिया था, वह कैसे टल सकता है ? फेरे लेना तो लिखा ही था।''

उनकी नवविवाहिता पत्नी भी वहीं लिखमादेसर गाँव में एक सिद्ध-स्थान पर तपस्या करने लगी। लालनाथजी तो ईश्वर की राह पर चले पर उनकी पत्नी भी पीछे नहीं हटी। लालनाथजी लग गये तो लग गये अपने सद्‌गुरु द्वारा बताये गये ईश्वरप्राप्ति के रास्ते पर और अपने मनुष्य-जन्म को सार्थक कर लिया। धन्य हैं ऐसे सत्‌शिष्य ! धन्य हैं ऐसी देवियाँ जो ईश्वरप्राप्ति के रास्ते चलनेवाले अपने पति को सहयोगी बन जाती हैं और स्वयं भी उस रास्ते चलकर अपना मंगल कर लेती हैं। ऐसी पुण्यशाली देवियाँ 'सहधर्मिणी', 'अर्धांगिनी' शब्दों की गरिमा समाज के सामने प्रकट कर देती हैं।

विश्वपटल पर उभरी 'ऋषि प्रसाद' की लोकप्रियता

ऋषि प्रसाद २५ वर्ष रजत जयंती वर्ष २०१५-१६

आध्यात्मिक पत्रिकाओं में अव्वल स्थान रखनेवाली ऋषि प्रसाद पत्रिका की लोकप्रियता 'ऋषि प्रसाद रजत जयंती वर्ष २०१५-१६' में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उभरकर सामने आयी। ट्विटर पर दुनियाभर के पाठकों द्वारा इसकी चर्चा छिड़ गयी और **#25YearsOf_ऋषिप्रसाद** नाम से ट्रेंड भारत में पहले स्थान पर रहा।

ऋषि प्रसाद पत्रिका की इस लोकप्रियता के बारे में पत्रकारों द्वारा पूछे जाने पर पूज्य बापूजी ने कहा : ''यह ऋषि प्रसाद पत्रिका को घर-घर पहुँचानेवाले पुण्यात्माओं की सेवा का प्रभाव है। शरीर स्वस्थ रहे, मन प्रसन्न रहे और बुद्धि में बुद्धिदाता की समता आये, ऐसी ही ज्ञान की बातें ऋषि प्रसाद में जाती हैं।

इसलिए 'ऋषि प्रसाद - नयी खबर (पत्रिका)' इस महीने ७८ लाख छप चुकी है।''

भगवान की हयग्रीव-अवतार लीला

भगवान हयग्रीव जयंती
२९ अगस्त

'श्रीमद् देवी भागवत' में सूतजी कहते हैं : मुनिगणो ! एक समय की बात है । भगवान श्रीहरि दस हजार वर्षों तक युद्धभूमि में डटे रहे । तत्पश्चात् थकान दूर करने वे वैकुंठ गये । पद्मासन लगाया व धनुष को भूमि पर टेककर उसीके सहारे वे कुछ झुक-से गये । श्रम के कारण या लीला-संयोग से उन्हें घोर निद्रा आयी । उसी समय इन्द्र, ब्रह्मा, शंकर आदि सभी देवता यज्ञ हेतु श्रीहरि से मिलने वहाँ आये । भगवान को योगनिद्रा में देख देवता चिंतित हुए । शिवजी बोले : ''देवताओ ! किसीकी निद्रा भंग करना निषिद्ध है, फिर भी यज्ञ सम्पन्न करने हेतु इन्हें जगा ही देना चाहिए।''

ब्रह्माजी ने वम्री नामक एक कीड़ा उत्पन्न किया । सोचा, 'यह धनुष की ताँत को काट देगा, जिससे झुका हुआ धनुष ऊपर को तन उठेगा । इससे श्रीहरि की निद्रा टूट जायेगी ।' वम्री को आज्ञा देने पर वह बोला : ''भगवन् ! मेरा कोई निजी काम बननेवाला हो तभी मैं इसे काटूँगा ।''

ब्रह्माजी ने कहा : ''यज्ञ के समय अगल-बगल जो हविष्य गिरेगा, वह तुम्हारा भाग होगा ।''

सूतजी कहते हैं : वम्री ने प्रत्यंचा खा ली । भयंकर ध्वनि हुई । चारों ओर घोर अंधकार छा गया । कुछ समय बाद भगवान शंकर और ब्रह्माजी ने देखा कि श्रीहरि का श्रीविग्रह बिना मस्तक का पड़ा हुआ है।

ब्रह्माजी बोले : ''तुम सभी उन सनातनमयी, निर्गुणस्वरूपिणी महामाया का चिंतन करो । उनका नाम 'ब्रह्मविद्या' भी है। अब वे ही हमारा कार्य सिद्ध करेंगी।''

आकाशवाणी हुई : 'देवताओ ! चिंता न करो। तुम लोगों का एक महान कार्य सिद्ध होनेवाला है। हयग्रीव दैत्य सरस्वती नदी तट पर बिना कुछ खाये मुझे प्रसन्न करने हेतु जप करता था। हजार वर्ष ऐसा कठिन तप होने पर मैंने उसे दर्शन देकर वर माँगने को कहा।

हयग्रीव बोला : ''माता ! किसी प्रकार भी मुझे मृत्यु का मुख न देखना पड़े।''

मैंने कहा : ''जन्मे हुए की मृत्यु निश्चित है । भला, ऐसी सिद्ध मर्यादा जगत में कैसे व्यर्थ की जा सकती है !''

हयग्रीव बोला : ''अच्छा, तो हयग्रीव (हय = घोड़ा, ग्रीवा = गर्दन) के हाथ ही मेरी मृत्यु हो।''

मैंने कहा : ''तथास्तु।''

वही पापी इन दिनों मुनियों और वेदों को अनेक प्रकार से सता रहा है। त्रिलोकी में कोई भी ऐसा नहीं है, जो उसे मार सके। अतएव घोड़े का सुंदर सिर उतारकर श्रीविष्णु के धड़ से जोड़ दिया जायेगा । वे ही भगवान हयग्रीव उस निर्दयी दानव के प्राण हरेंगे।'

ब्रह्माजी ने भगवान के शरीर पर घोड़े का मस्तक जोड़ने की व्यवस्था की । भगवान विष्णु का हयग्रीव-अवतार हुआ । वह दानव बड़ा अभिमानी था । देवताओं से उसकी घोर शत्रुता थी । भगवान हयग्रीव लम्बे समय तक उसके साथ युद्धभूमि में डटे रहे, तब कहीं उसकी मृत्यु हुई। हरि अनंत हरि कथा अनंता। भगवान की लीलाएँ बड़ी विलक्षण एवं अनंत हैं । अहंकारी दुष्टों का नाश करने के लिए वे कैसी-कैसी लीलाएँ करते हैं !

दुर्वासा ऋषि व भगवान की अनोखी लीला

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष)

एक समय दुर्वासा ऋषि विचरण करते हुए गाथा गाने लगे : ''है कोई माई का लाल जो अपने घर पर मुझे मेहमान रख ले ? हाँ, अगर कोई गलती की तो शाप दूँगा। चाहे जब आऊँ, जब जाऊँ, चाहे जो माँगूँ, चाहे जब खाऊँ, जितना खाऊँ... चाहे कुछ उजाड़ूँ या सँवारूँ... मुझे रोकेगा-टोकेगा तो शाप मिलेगा।''

अब कौन ऐसी आफत को बुलाये ! जैसे भगवान का स्वभाव लीला करने का है, दुर्वासाजी ने भी लीला चालू की। कृष्ण आये, बोले : ''हाँ, मैं आपका सेवक हूँ।''

दुर्वासा : ''मेरी शर्तें सुन लीं ?''

''आपने जो शर्तें कहीं वे भी और जो भूल गये होंगे वे भी सब मुझे स्वीकार हैं। ब्रह्मज्ञानी संत हमारे द्वार पर रहें तो हमें पावन होने का अवसर मिलेगा।''

दुर्वासा रहे। कभी बोले धरती पर बिछाओ तो कभी खाट पर बिछाओ ! कभी ये बनाओ, फिर चल देंगे, नहीं खायेंगे। कभी तो सैकड़ों लोगों का भोजन एक साथ खा गये। एक दिन पहले तो घर के सारे तकिये, रजाई-वजाई इकट्ठी करके जला दिया, बोले : 'होली, होली...' तो श्रीकृष्ण भी बोलते हैं : 'होली, होली...' फिर श्रीकृष्ण से बोले : ''मुझे शीघ्र खीर खानी है।'' कृष्ण ने खीर का कड़ाहा पहले से ही तैयार करा के रखवाया था।

''कृष्ण ! मैं तो दुर्वासा हूँ लेकिन तुम भी कम नहीं हो। थोड़ी खीर बनाते तो मैं और खा-खा के तुमको हरा देता।'' गुरु तो गुरु हैं लेकिन कृष्ण भी कम नहीं हैं। आज गुरु को खीर खानी थी तो कृष्ण ने कड़ाहा भर रखा। फिर श्रीकृष्ण को छेड़ने के लिए दुर्वासा बोले : ''ले कृष्ण ! मैंने खीर खायी है, तू भी खा ले; बाकी की जो खीर है पूरे शरीर पर मल ले।''

भगवान कृष्ण ने बिना विचारे ही उनकी आज्ञा का पालन किया। वही जूठी खीर उन्होंने अपने सिर पर तथा अन्य सारे अंगों में पोत ली।

रुक्मिणी खुश-खुश हो रही है कि 'गुरु जबरदस्त हैं', हँस रही है।

दुर्वासा : ''तू हँस रही है ! इधर आ, इधर आ।'' और रुक्मिणी के मुँह पर भी खीर मलवा दी, सफेद बंदरी बना दी।

श्रीकृष्ण : ''मल दिया, और गुरुजी ?''

''मुझे घूमने जाना है, रथ मँगवाओ !''

रथ आ गया। घोड़े हटा के रुक्मिणी को रथ में जोत दिया, बोले : ''तुम रथ खींचो।'' रुक्मिणी रथ खींचने लगीं। गली-गलियारे में रथ घुमाया। लोगों में हाहाकार मच गया कि 'रुक्मिणी, कृष्ण की यह दुर्दशा कर दी दुर्वासा ने !'

दुर्वासा : ''अब रथ खड़ा कर दो।''

''गुरुजी ! अब क्या आज्ञा है ? अब आपको क्या चाहिए ?''
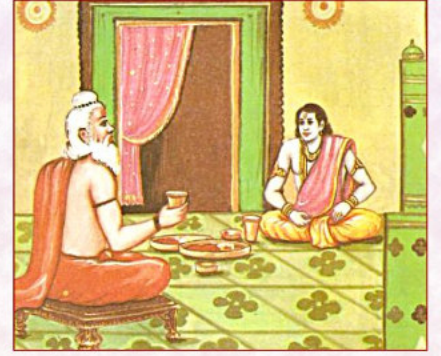
''मेरे को जो चाहिए था सब मिल गया। अब तू माँग ले कृष्ण, क्या चाहिए ?''

''गुरुजी ! आप संत मेरे पर प्रसन्न रहो बस।''

दुर्वासा चाहते हैं भगवान प्रसन्न रहें, भगवान चाहते हैं दुर्वासा प्रसन्न रहें। दुर्वासा बोले : ''मैं तो प्रसन्न रहूँगा, तेरा नाम लेनेवाले भी प्रसन्न होने लग जायेंगे लाला ! तू ऐसा प्यारा रहेगा लेकिन देख, पूरे शरीर को मेरी जूठी खीर मल ली सो पूरा शरीर वज्रकाय हो गया लेकिन पैरों के तलवे पर खीर नहीं मली। पैरों के तलवे पर ध्यान रखना। यहाँ कोई हथियार न लग जाय।''

आखिर जब कृष्ण विदा हो रहे थे

तो व्याध को मृग के रूप में दिखे और पैर के तलवे में ही तीर लगा। तो लीला करके भी मंगल करना और मंगल संदेश देना यह भगवान की आदत है और प्राणिमात्र के सुहृद हैं भगवान !

*****

बुद्धि की कसरत

जिन शिष्यों ने अपने सद्गुरु की विशेष रूप से सेवा द्वारा गुरुकृपा पायी, उनके नाम नीचे दी गयी वर्ग-पहेली में से प्रश्नों के आधार पर खोजें।

(१) विशेष विद्वत्तावाले न होने पर भी गुरुसेवा के प्रताप से सभी विद्वान गुरुभाइयों से आगे निकल गये व बिना पढ़े ही शास्त्रों का रहस्य जिनके अंतर में प्रकट हुआ, वे कौन थे ?

(२) किसने गुरु की आज्ञानुसार ४०० गायों के १००० होने तक अकेले जंगल में सेवा की और इसीके प्रभाव से ब्रह्मज्ञान पाया ?

(३) कौन-से जमींदार ने गुरुसेवा में सब कुछ लुटा के कठोर तितिक्षाएँ सहकर गुरुकृपा पायी व 'गुरु का तारक जहाज' की उपाधि पायी ?

(४) गुरुआज्ञा सिर-आँखों पर रख १२ साल तक जो तिल कूटता रहा और इस सेवा के फलस्वरूप जिसने ब्रह्मज्ञान पाया, वह कौन ?

(५) गुरु के खेत की सुरक्षा के लिए रातभर ठंडे पानी में लेटा रहनेवाला कौन गुरुसेवक था ?

(६) अथक गुरुसेवा व आज्ञापालन द्वारा मात्र २३ वर्ष की आयु में आत्मज्ञान पाया और पूरा जीवन प्राणिमात्र के कल्याण तथा संस्कृति-सेवा में जिन्होंने लगा दिया, वे कौन गुरुभक्त हैं ?

(उत्तरों हेतु प्रतीक्षा कीजिये अगले अंक की)

(उत्तरों हेतु प्रतीक्षा कीजिये अगले अंक की)

रा	धा	पौ	मी	रा	न	व	प	ज्य	बा	पू	म
दू	म	हा	त्मा	स	लू	का	म	लू	का	म	क
द	हा	क	बी	र	क	या	सा	आ	पू	द	रं
या	त्मा	ह	स	ट	का	रा	म	बा	रु	श	द
ल	ए	क	तो	त्य	क	म	जी	रु	क्म	णि	जी
जी	क	र्य	भो	म	का	म	भा	ई	मं	झ	त
श्व	चा	मी	द	ज्ये	रा	म	द्र	गु	शं	ङ	सं
आ	थ	रा	ई	शा	मी	सं	जा	जा	क	लो	पा
म	जी	बा	आ	स्वा	मी	रा	म	बा	र्थ	रे	ड
शिव	न	श्री	ली	ला	शा	ह	जी	प	ल	ढ़	पौ
आ	त	शा	प्रै	पा	पौ	वा	मा	मि	शी	क	ढ़
सं	र	सिं	ह	सं	त	ति	लो	पा	ड़ा	का	म

आप परमानंद हैं

(३० जुलाई २०१५ को जोधपुर से आया संदेश)

एक ऐसा साधन भी है कि जिससे हर समय आनंद रहता है और जिसमें परिश्रम भी नहीं करना पड़ता, वह है आनंदमय का अभ्यास । 'आनन्दमयोऽभ्यासात्' (ब्रह्मसूत्र : १.१.१२) आनंद परमात्मा का स्वरूप है। चारों तरफ, बाहर-भीतर आनंद-ही-आनंद भरा हुआ है । सारे संसार में आनंद छाया हुआ है । यदि ऐसा दिखलाई न दे तो वाणी से केवल कहते रहो और

मन से मानते रहो । जल में डूब जाने, गोता खा जाने के समान निरंतर आनंद ही में डूबा रहे और गोता लगाता रहे । रात-दिन आनंद में मग्न रहे । किसीकी मृत्यु हो जाय, घर में आग लग जाय अथवा और भी कोई अनिष्ट कार्य हो जाय तो भी आनंद-ही-आनंद... कुछ भी हो, केवल आनंद-ही-आनंद !

इस प्रकार का अभ्यास करने से सम्पूर्ण दुःख एवं क्लेश नष्ट हो जाते हैं । वाणी से उच्चारण करे तो केवल आनंद ही का, मन से मनन करे तो आनंद ही का तथा बुद्धि से विचार करे तो आनंद ही का परंतु यदि ऐसी प्रतीति न हो तो कल्पित रूप से ही आनंद का अनुभव करे । इसका भी फल बहुत अच्छा होता है । ऐसा करते-करते आगे चलकर नित्य आनंद की प्राप्ति हो जाती है । इस साधन को सब कर सकते हैं ।

स्वाधीनता-पराधीनता का झगड़ा नहीं आपमें । आप तो बिल्कुल एक, अद्वितीय आनन्दपरमानन्दः - आनन्दाऽपि परमानन्दः । दुनिया में कोई भी आनंद हो सकता है, आप समझ सकते हैं कि 'इसको यह आनंद है, यह आनंद है...' परंतु यदि दुनिया में आनंद है तो आप परमानंद हैं ।

जैसे 'मधुर-मधुर' बोलते हैं, 'ललित-ललित' बोलते हैं यही परम है । आप किसी चीज को देखते हैं तो आँख से आनंद उसमें डालते हैं, आप किसी चीज को छूते हैं तो हाथ से आनंद उसमें डालते हैं । किसीके बारे में बोलते हैं तो अपनी जीभ से आनंद उसमें डालते हैं । आप किसीके बारे में सोचते हैं तो अपने दिल-दिमाग से आनंद उसमें डालते हैं । सबको रसमय बनानेवाले आप हैं, आप ही हो आत्मदेव ! आनंद को आनंद बनानेवाले आप हैं । चेतन को चेतन बनानेवाले आप हैं । ज्ञान को ज्ञान बनानेवाले आप हैं । सत्य को सत्य बनानेवाले आप हैं ।

आनन्दपरमानन्दः स बोधस्त्वं सुखं चर ।

(अष्टावक्र गीता : १.१०)

केवल आनंद-ही-आनंद नहीं, आनंद-बोध स्वरूप आप ! इसलिए 'सुखं चर' - सुख से विचरो । सुख से विचरो माने जो तुम्हारा व्यवहार है, वह सुखरूप व्यवहार है, तुम्हारा खाना सुख, तुम्हारा चलना सुख, तुम्हारा बोलना सुख, तुम्हारा सोना सुख । तुम स्वयं दुःख मत बनो और दुःखदायी मत बनो, सुखरूप बनो । जिस-किसीसे मिलो नहीं और जिससे मिलो, उसको निहाल करते चलो । सुख देते चलो, सुख देते चलो ! सुख तुम्हारा स्वरूप है । सहज स्वभाव से ही जैसे सूर्य में से प्रकाश निकलता है, अग्नि में से ताप निकलता है, वायु में से प्राण निकलता है, जल में से रस निकलता है, पृथ्वी में से स्वाद निकलता है, इस तरह से तुम्हारे स्वरूप में यदि व्यवहार है तो वह परमानंदस्वरूप व्यवहार है, वह ज्ञानस्वरूप व्यवहार है, वह सत्स्वरूप व्यवहार है । 'सुखं चर' आनंद में मग्न रहो और आनंद में विचरण करो ।

इस बात का दुःख है...

(संस्कृत दिवस : २९ अगस्त)

एक बार ब्रह्म समाज के प्रमुख नेता केशवचन्द्र सेन इंग्लैंड जा रहे थे। जाने से पूर्व उन्होंने महर्षि दयानंद से भेंट की और बोले : ''मुझे दुःख है कि आप वेदों के विद्वान होकर भी अंग्रेजी नहीं जानते, वरना वैदिक संस्कृति पर प्रकाश डालनेवाला विदेश-यात्रा में मेरा एक साथी और होता।''

दयानंदजी मुस्कराकर बोले : ''मुझे भी इस बात का दुःख है कि ब्रह्म समाज का नेता अपने पूर्वजों की भाषा संस्कृत नहीं जानता और अपने देशवासियों को भी विदेशी भाषा में उपदेश देता है, जिसे देशवासी समझते ही नहीं। यदि वह नेता अंग्रेजी के बजाय संस्कृत जानता तो वैदिक संस्कृति की अधिक सेवा करता।'' केशवचन्द्र को अपनी गलती का एहसास हुआ। दयानंद सरस्वती ने केशवचन्द्र सेन को वेदों की ओर आकृष्ट किया और वास्तविक वैदिक धर्म का महत्त्व समझाया। रामकृष्ण परमहंस व दयानंद सरस्वती के सम्पर्क में आने से केशवचन्द्र सेन भारतीय संस्कृति के महानतम शास्त्रों से अवगत हुए और उन्हें अपने जीवन में उतारा।

डॉ. अब्दुल कलाम को श्रद्धांजलि

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का २७ जुलाई को देवशयनी एकादशी के पावन दिन हृदयाघात से देहावसान हो गया। मिसाइल-मैन डॉ. कलाम ने भारत को विज्ञान एवं तकनीकी जगत में विश्व के परिदृश्य में खड़ा करने में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। डॉ. कलाम ने मुसलिम होते हुए भी अपने जीवन को 'गीता' के सिद्धांतों के अनुरूप ढाला था।

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक, लेखक, विचारक होते हुए भी आप बड़े ही सरल-हृदय थे। आप सच्चे देशभक्त, कर्मनिष्ठ पुरुष थे और जनहित के कार्यों का खुले हृदय से समर्थन करते थे।

राष्ट्रपति पद पर रहते हुए बापूजी की प्रेरणा से चलाये जा रहे सेवाकार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए आपने कहा था : ''परम पूज्य बापूजी एवं उनके आश्रम द्वारा गरीबों और पिछड़े लोगों को ऊपर उठाने के कार्य चलाये जा रहे हैं, मुझे प्रसन्नता है। मानव-कल्याण के लिए, विशेषतः प्रेम व भाईचारे के संदेश के माध्यम से किये जा रहे विभिन्न आध्यात्मिक एवं मानवीय प्रयास समाज की उन्नति के लिए सराहनीय हैं।''
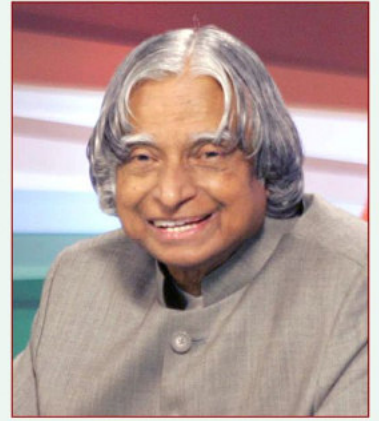
वास्तव में गुरुकृपा और गुरु की भक्ति की कोई सीमा ही नहीं है। जिसके मन में गुरुभक्ति के लिए अनुराग होता है, उत्कंठा होती है, जिसे गुरुसेवा के सिवा और कुछ भी अच्छा नहीं लगता, वही पुरुष तत्त्वज्ञान का आधार है और उसीके कारण ज्ञान का अस्तित्व है।

- संत ज्ञानेश्वरजी महाराज

आरोग्यरक्षक व उत्तम पथ्य करेला

स्वस्थ व निरोग शरीर के लिए खट्टे, खारे, तीखे, कसैले और मीठे रस के साथ-साथ कड़वे रस की भी आवश्यकता होती है। करेले में कड़वा रस तो होता ही है, साथ ही यह अनेक गुणों को अपने भीतर सँजोये हुए है।

करेला पचने में हलका, रुचिकर, भूख बढ़ानेवाला, पाचक, पित्तशामक, मल-मूत्र साफ लानेवाला, कृमिनाशक तथा ज्वरनाशक है। यह रक्त को शुद्ध करता है, रोगप्रतिकारक शक्ति एवं हीमोग्लोबिन बढ़ाता है। यकृत की बीमारियों एवं मधुमेह (डायबिटीज) में अत्यंत उपयोगी है। चर्मरोग, सूजन, व्रण तथा वेदना में भी लाभदायी है। करेला कफ प्रकृतिवालों के लिए अधिक गुणकारी है। स्वास्थ्य चाहनेवालों को सप्ताह में एक बार करेले अवश्य खाने चाहिए।

गुणकारी करेले की सब्जी

सब्जी बनाते समय कड़वाहट दूर करने के लिए करेले के ऊपरी हरे छिलके तथा रस नहीं निकालना चाहिए। इससे करेले के गुण बहुत कम हो जाते हैं। कड़वाहट निकाले बिना बनायी गयी करेले की सब्जी परम पथ्य है। (करेले की सब्जी बनाने की सही विधि हेतु पढ़ें ऋषि प्रसाद, अगस्त २०१४, पृष्ठ ३१)

बुखार, आमवात, मोटापा, पथरी, आधासीसी, कंठ में सूजन, दमा, त्वचा-विकार, अजीर्ण, बच्चों के हरे-पीले दस्त, पेट के कीड़े, मूत्ररोग एवं कफजन्य विकारों में करेले की सब्जी लाभप्रद है।

करेले के औषधीय प्रयोग

मधुमेह (डायबिटीज) : आधा किलो करेले काटकर १ तसले में ले के सुबह आधे घंटे तक पैरों से कुचलें। १५ दिन तक नियमित रूप से यह प्रयोग करने से रक्त-शर्करा (ब्लड शुगर) नियंत्रित हो जाती है। प्रयोग के दिनों में करेले की सब्जी खाना विशेष लाभप्रद है।

तिल्ली व यकृत वृद्धि :

(१) करेले का रस २० मि.ली., राई का चूर्ण ५ ग्राम, सेंधा नमक ३ ग्राम - इन सबको मिलाकर सुबह खाली पेट पीने से तिल्ली व यकृत (लीवर) वृद्धि में लाभ होता है।

(२) आधा कप करेले के रस में आधा कप पानी व २ चम्मच शहद मिलाकर प्रतिदिन सुबह-शाम पियें।

रक्ताल्पता : करेलों अथवा करेले के पत्तों का २-२ चम्मच रस सुबह-शाम लेने से खून की कमी में लाभ होता है।

मासिक की समस्या : मासिक कम आने या नहीं आने की स्थिति में करेले का रस ४० मि.ली. दिन में २ बार लें। अधिक मासिक में करेले का सेवन नहीं करना चाहिए।

गठिया : करेले या करेले के पत्तों का रस गर्म करके दर्द और सूजनवाले स्थान पर लगाने व करेले की सब्जी खाने से आराम मिलता है।

तलवों में जलन : पैर के तलवों में होनेवाली जलन में करेले का रस लगाने या करेला घिसने से लाभ होता है।

विशेष : करेले का रस खाली पेट पीना अधिक लाभप्रद है। बड़े करेले की अपेक्षा छोटा करेला अधिक गुणकारी होता है।

सावधानियाँ : जिन्हें आँव की तकलीफ हो, पाचनशक्ति कमजोर हो, मल के साथ रक्त आता हो, बार-बार मुँह में छाले पड़ते हों तथा जो दुर्बल प्रकृति के हों उन्हें करेले का सेवन नहीं करना चाहिए। करेले कार्तिक मास में वर्जित हैं।

देश-विदेश के आश्रमों में गुरुपूर्णिमा पर उमड़ा जनसागर

(‘ऋषि प्रसाद’ प्रतिनिधि)

गुरु एवं शिष्य के अटूट संबंध की मधुर स्मृति दिलानेवाले महापर्व ‘गुरुपूर्णिमा’ के निमित्त पूज्य बापूजी के दर्शन के अभिलाषी असंख्य भक्त देश के कोने-कोने से एवं विदेशों से भी जोधपुर पहुँचे । महिलाएँ-पुरुष, बच्चे-बच्चियाँ, युवक-युवतियाँ, वृद्धजन आदि सभी आयु-वर्ग के लोग बारिश आदि अनेक प्रतिकूलताएँ सहते हुए भी बापूजी की एक झलक पाने के लिए सड़क की दोनों ओर कतारों में खड़े घंटों-घंटों तक प्रतीक्षा कर दर्शन-लाभ ले रहे थे। गुरु-दर्शन के लिए इतना बड़ा हुजूम देखकर जोधपुरवासी चकित थे। सभी भक्तों की केसरी रंग की टोपियों पर लिखा था, ‘बापूजी निर्दोष हैं’ और सभीकी बस यही पुकार थी, ‘आ जाओ गुरुदेव ! आ जाओ... ।’

जोधपुर आश्रम में पादुका-पूजन, मानसिक पूजन, बापूजी का विडियो सत्संग, जप, कीर्तन, आरती आदि करके पूज्यश्री के शिष्यों ने गुरुपूर्णिमा मनायी । गरीब-गुरबों को भरपेट भोजन कराया गया तथा उनमें अनाज, बर्तन, कपड़े, छाते, रेनकोट, मिठाई, सत्साहित्य आदि एवं नकद रुपये वितरित किये गये। इन्हें पाकर गरीबों के चेहरे खिल उठे । पाकिस्तान से आये सैकड़ों गरीब शरणार्थियों ने भी इसका लाभ लिया और वे बोले कि ‘आज के वक्त में केवल एक इन्सान को भी कोई जल्दी से भोजन नहीं कराता, आश्रम में हजारों गरीब लोगों को इतनी इज्जत से भोजन कराया जाता है एवं वस्तुएँ, रुपये आदि देकर मदद भी की जाती है । बापूजी वाकई में सभीका खयाल रखनेवाले महान संत, सच्चे फकीर हैं।’

अहमदाबाद आश्रम में गुरुपूनम का यह महापर्व साधकों ने अपने सद्गुरु की याद में श्रद्धा-भक्तिपूर्वक मनाया । इस अवसर पर बापूजी के सत्संग-सान्निध्य के लिए तरस रहे साधकों के नेत्र गीले थे। इस दिन प्रातः ५ बजे से आश्रमवासियों ने गुरुवर के मानसिक पूजन, सत्संग, श्रीचित्र के दर्शन आदि का लाभ लिया । साध्वी रेखा बहन का प्रवचन भी हुआ। दूर-दूर से आये साधकों ने भी विभिन्न सत्रों में सद्गुरुदेव के मानसिक पूजन का लाभ लिया । जब जोधपुर से पूज्य बापूजी का गुरुपूनम पर साधकों के लिए भिजवाया गया विशेष संदेश प्राप्त हुआ तो सभी भावविभोर हो गये । दर्शन के लिए आनेवाले भक्तों की कतारें सतत चलती रहीं। इस अवसर पर सभीके लिए भंडारे

(भोजन-प्रसाद) की व्यवस्था भी की गयी थी। बीच-बीच में सभीको पूज्य बापूजी के विडियो सत्संग का लाभ मिलता रहा। 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका के २५ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में रजत जयंती मनायी गयी व कलशयात्रा निकाली गयी। इसके साथ ही पादुका-पूजन हुआ। बाल संस्कार केन्द्र के बच्चों ने नाटिका प्रस्तुत की एवं ऋषि प्रसाद की सेवा करनेवाले पुण्यात्माओं ने ज्ञान-प्रचार की सेवा के प्रताप से उनके जीवन में हुए अद्भुत लाभों को बताते हुए अपने अनुभव साझा किये। गुरुपूर्णिमा के दूसरे दिन 'ऋषि प्रसाद' का राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ, जिसमें ऋषि प्रसाद की रंगीन प्रचार पुस्तिका का विमोचन किया गया।

जोधपुर एवं अहमदाबाद की तरह देश-विदेश के सैकड़ों आश्रमों एवं सत्संग-केन्द्रों पर भी गुरुपूर्णिमा का पर्व मनाया गया। ट्विटर आदि सोशल मीडिया पर असंख्य साधकों ने पूज्यश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की और अपने जीवन में घटित सकारात्मक अनुभवों को समाज के सामने रखा। **#MyGuruPurnimaWith_बापूजी** ट्रेंड पूरे देश के सर्वाधिक चर्चित विषयों में से एक रहा।

इतने घोर कुप्रचार के बाद भी साधकों की श्रद्धा-आस्था हिली नहीं और वे इतनी बड़ी संख्या में गुरु-दर्शन के लिए जोधपुर, अहमदाबाद एवं स्थानीय आश्रमों में पहुँचे क्योंकि वे अपने गुरुदेव की पवित्रता, निर्दोषता के बारे में जानते हैं और इसके लिए उन्हें किसीके प्रमाणपत्र की जरूरत नहीं है। वे कुप्रचार के क्रूर बहकावे में आनेवाले भी नहीं हैं।

'ऋषि प्रसाद - नयी खबर (पत्रिका)' अभियान

जब महात्मा बुद्ध के खिलाफ कुप्रचार की आँधी चल रही थी, तब षड्यंत्र ऐसे रचा गया था कि लोग भ्रमित हो गये थे। चारों तरफ बुद्ध के खिलाफ वातावरण बन गया था। ऐसे समय में एक शिष्य उनके पास आया, सुप्रचार करने की आज्ञा लेकर चल पड़ा और आज परिणाम सब जानते हैं। वर्तमान में कुप्रचार के समय में पूज्य बापूजी के असंख्य शिष्यों को भी सुप्रचार का डंका बजाते हुए प्रत्यक्ष देखा जा सकता है और इसके परिणामस्वरूप बापूजी की निर्दोषता और सत्य की जीत
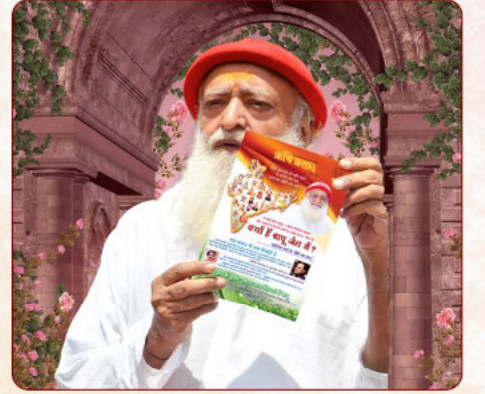
सबके सामने प्रत्यक्ष होगी।

अहमदाबाद में साधक भाई-बहनें अलग-अलग समूह बनाकर प्रतिदिन निकलते हैं और मात्र एक-दो घंटे में ३००-४०० ऋषि प्रसाद - नयी खबर (विशेषांक) शुल्क लेकर लोगों को दे के उन तक बापूजी की निर्दोषता एवं सच्चाई पहुँचाते हैं। जबलपुर एवं जालंधर महिला उत्थान मंडल, लुधियाना व आगरा युवा सेवा संघ, पूर्णिया (बिहार) और जम्मू के साधकगण, राजनांदगाँव व अन्य स्थानों के बाल संस्कार केन्द्रों के बच्चे तथा आश्रम की विभिन्न समितियाँ व साधक जन-

स्थानों पर तथा समाज के प्रमुख व्यक्तियों, अधिकारियों व कार्यालयों तक यह नयी खबर अंक पहुँचा रहे हैं। लिम्बायत-सूरत (गुज.), अखनूर (जम्मू-कश्मीर), छिंदवाड़ा (म.प्र.) आदि के साधकों ने 'ऋषि प्रसाद सुप्रचार यात्रा' निकालकर लोगों तक 'नयी खबर' पहुँचायी। इस प्रकार पूरे देश में स्थान-स्थान पर ऋषि प्रसाद - नयी खबर (पत्रिका) को घर-घर पहुँचाने का अभियान जारी है।

चिकित्सा शिविरों का आयोजन

हाल ही में महाराष्ट्र के धुलिया जिले के नंदरडी, वासर्डी, जूना चाँदसूर्या, मांडणी पाड़ा, फत्तेपुर, बोरपाणी, चाकडू, आम्बा फाटा, नवा चाँदसूर्या, चाँदसे, गधतदेव, वर्शी, गव्हाणे, दत्ताणे, आजंदेखुर्द, मालीच, गोराणे, चाँदगड, विटाई, शेल आदि गाँवों में होमियोपैथिक चिकित्सा शिविर लगाये गये। इनमें संधिवात, त्वचारोग, दमा, स्त्रीरोग, एलर्जी, कब्जियत, बवासीर, भगंदर, बच्चों में कुपोषण आदि बीमारियों से ग्रस्त हजारों रोगियों का निःशुल्क उपचार किया गया। मरीजों ने इन शिविरों में शारीरिक व्याधियों का निवारण तो पाया, साथ ही मानसिक तनाव, चिंता, भय, अशांति से मुक्ति दिलाकर सुखमय जीवन के पथ पर अग्रसर करनेवाले सत्संग-अमृत का लाभ भी ऋषि प्रसाद पत्रिका व विडियो सी.डी. आदि के माध्यम से पाया।

ग्वालियर (म.प्र.) में भी निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया गया, जिसमें स्वास्थ्य-परीक्षण के अलावा मधुमेह, मलेरिया एवं अन्य रोगों की जाँच की गयी।

अन्य सेवाकार्य

पूज्य बापूजी की प्रेरणा से जम्मू आश्रम में अमरनाथ यात्रा के यात्रियों के लिए १२ जुलाई से भंडारा निरंतर चालू है। इसमें देश के कोने-कोने से आये श्रद्धालुओं को भोजन कराया जा रहा है। हाथरस (उ.प्र.) में योग व उच्च संस्कार कार्यक्रम में बच्चों को हॉटकेस तथा तुलसी के पौधों का वितरण किया गया। जोधपुर, चित्तौड़गढ़ (राज.), प्रयागराज सहित अनेक स्थानों पर निकाली गयी हरिनाम संकीर्तन यात्राओं में लोगों को अधिक मास की महिमा बतायी गयी। नासिक (महा.) में कुम्भमेला ध्वजारोहण निमित्त संकीर्तन यात्रा निकाली गयी।

जगन्नाथ रथयात्रा के अवसर पर जगन्नाथपुरी में भव्य संकीर्तन यात्रा निकाली गयी, जिसमें शरबत एवं सत्साहित्य वितरण किया गया। रुड़की (उत्तराखंड), खतौली (उ.प्र.), औरंगाबाद (महा.),

ग्राम जोगवाँ जि. जम्मू एवं शाजापुर (म.प्र.) में विद्यार्थी शिविर हुए। हरिद्वार में गरीब विद्यार्थियों को प्राणायाम, यौगिक प्रयोग, आसन आदि सिखाकर अंत में किशमिश, फल, प्रसाद एवं चप्पलें बाँटी गयीं। कुष्ठ रोगियों के आश्रम और गरीब बस्तियों में जाकर अनाज व फल वितरण किया गया। प्रकाशा (महा.) में सिंहस्थ कुम्भ पर्व पर सत्संग तथा भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों लोगों ने लाभ लिया।

फरीदाबाद (हरि.) में हिन्दू जनजागृति समिति, श्री योग वेदांत सेवा समिति, गो-मानव सेवा ट्रस्ट, किसान संघर्ष समिति, कामधेनु गौ न्यास, गौरक्षा सेवा समिति, गौरक्षा दल, राजीव दीक्षित स्वदेशी रक्षक संघ, सनातन संस्था आदि १५० से भी अधिक हिन्दुत्ववादी संगठनों ने मिलकर निर्दोष बापूजी एवं हिन्दू संतों की रिहाई, संतों व देवी-देवताओं के सम्मान की रक्षा तथा गोवंश-पालन की व्यवस्था की माँग की। जोधपुर (राज.) में अखिल भारत हिन्दू महासभा (युवा मोर्चा) एवं श्रीराम सेना के युवा समर्थकों ने बापूजी की शीघ्र रिहाई की माँग की। निर्दोष बापूजी की रिहाई के लिए जंतर-मंतर, दिल्ली में पिछले ७०९ दिनों से धरना चालू है।

आत्मज्ञान से सराबोर पूज्य बापूजी के पत्र

दिनांक : १९-६-१९७६

श्री पंचकुबेरेश्वर महादेव,

मोटी कोरल (बड़ौदा के निकट)

परम पूज्य लालजी महाराज को मेरा जरा भी प्रणाम नहीं।

क्यों भाई, बराबर है न ! प्रणाम तो भिन्नता में होते हैं।१ और यदि प्रणाम की लालच हो तो मुझसे अलग होकर दिखाओ लालाराम !

आशा + राम = लाला + राम

राम + राम = राम

लाला उड़े, आशा उड़े, रह गये राम के राम।

आशाराम

*****

हरिद्वार

दिनांक : २८-६-१९७६

परम पूज्य श्री लालजी महाराज,

श्री रामनिवास, नारेश्वर आश्रम।

मेरे लालाराम ! जय श्रीराम राम राम।

बहुत दिनों से लाला काका को पत्र लिखूँ ऐसा होता था परंतु दूसरा विचार आता कि अरे ! लालाराम मुझसे अलग हैं ही कहाँ ?

प्रेम पतिया तब लिखूँ जब पिया२ हो परदेश।

तन में, मन में, जन में, ता को क्या संदेश ?

वाह-रे-वाह ! छैल-छबीले, रंग-रँगीले, अलबेले मस्ताने... प्यारे मेरे ! सब हैं तेरे... हरि के द्वार में आयी हुई एकांत गंगा के किनारे तपोनिधि संत की साधना-कुटीर में थोड़े दिन रुका।

अभी-अभी नीलधारा की ओर घूमकर आया। कमरा बंद करके मस्ती में... भजन एवं इधर-उधर स्वरूपानंद में अठखेलियाँ करता मन... आनंद के उल्लास से आपश्री को पत्र लिखने बैठ गया हूँ। लिखा वह न लिखा हो जायेगा। वाह-रे-वाह !

ना शोक नाहिं मोह ना संताप करना चाहिये।

निःशंक हो, निर्द्वन्द्व हो,

सुख से विचरना चाहिये ॥

नर देह दुर्लभ पाय कर,

भव सिंधु तरना चाहिये।

अब तक मरा सो मर लिया,

अब तो न मरना चाहिये ॥

(वेदांत छंदावली)

ऐसी है आप सरीखे संतों की ललकार ! मेरे लालजी ! कैसा है ? याद आता है न चारों तरफ का दृश्य ? नारेश्वर जाते समय बीच में हम रुके थे।

आज के बाद कहाँ जाना, क्या करना, क्या न करना, कहाँ रहना ? सब तुमको सौंप दिया। राजी हैं तेरी रजा में...

आबू ले जाय तो भले, नारेश्वर ले जाय तो भले, हिमालय के एकांत में ले जाय तो भले, मोटेरा में मरने को कहें तो भले। भले और भले परंतु शर्त यह है कि दृष्टि तेरे (स्वरूप के) सिवा कहीं न जाय।

ज्यां ज्यां नजर मारी पडे यादी भरी त्यां आपनी।

जहाँ-जहाँ मेरी नजर जाती है, वहाँ आपकी यादें भरी हैं। आपकी स्मृति होती रहे।

अररर... ! प्यारे के साथ शर्तबाजी, व्यापार ! नहीं-नहीं, यह तो उस (परमात्मा) के साथ लाड़-प्यार है भाई लाड़ ! नहीं-नहीं, लाड़ व लाड़ला और लाड़ लड़ानेवाला अब अलग रहे ही नहीं तो राम राम राम...

- आशाराम

(शृंखला समाप्त)

देश-विदेश में मनाये गये गुरुपूर्णिमा महोत्सव की कुछ झलकें (आवरण पृष्ठ २ का शेष)

गुरुपूर्णिमा पर निकली संकीर्तन यात्राओं में उमड़ा हुजूम

गुरुपूर्णिमा पर जोधपुर आश्रम में हुए भंडारे के कुछ दृश्य

गरीब, जरूरतमंदों को कराया भोजन, बाँटी गयी जीवनोपयोगी वस्तुएँ

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

RNP. No. GAMC 1132/2015-17
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2017)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/15-17
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2017)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2015-17
WPP LIC No. U (C)-232/2015-17
MNW-57/2015-17
'D' No. MR/TECH/47.6/2015
Date of Publication: 1st Aug 2015

गुरुपूर्णिमा महोत्सव एवं ऋषि प्रसाद रजत जयंती महोत्सव, अहमदाबाद आश्रम

श्रीगुरुपादुका एवं ऋषि प्रसाद पत्रिका की शोभायात्रा

देशभर में मनायी गयी 'ऋषि प्रसाद रजत जयंती' के कुछ दृश्य

पटना, जोधपुर, लुधियाना, लिम्बायत-सूरत, भुवनेश्वर, वापी (गुज.), नासिक

नववर्ष की सुंदर सौगात २०१६
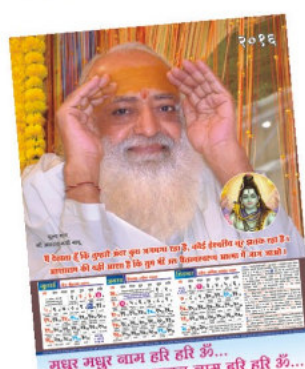
पूज्य बापूजी के सत्प्रेरणा व शांतिप्रदायक एवं चित्ताकर्षक श्रीचित्रों तथा अनमोल आशीर्वचनों से सुसज्जित वर्ष २०१६ के वॉल कैलेंडर उपलब्ध हैं।

२५० या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम, फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं। स्वयं के साथ अपने मित्रों, परिचितों को भी अवश्य लाभ दिलायें। सम्पर्क : अहमदाबाद मुख्यालय - (०७९) ३९८७७७३२

राष्ट्रीय आविष्कार अभियान में छाया रहा गुरुकुल पृष्ठ १९

Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month. * Posting at ND PSO on 10th & 11th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 24th & 25th of E.M.